विश्व राष्ट्रीय हिन्दी मासिक
स्नेह समाज

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.-६३, नीमसराय,
मुण्डेरा, इलाहाबाद -२११०११
मो०: ६३३५१५५६४६

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

वर्ष : 5, अंक : 3 मार्च 2006

मूल्य वृद्धि सूचना

कीमत एक प्रतिः रु0 4/-
वार्षिक : रु0 50/-
विशिष्ट सदस्य : रु0 100/-
द्विवार्षिक सदस्यता : रु0 95/-
त्रैवार्षिक सदस्यता : रु0 140
पंचवर्षिय सदस्यता :रु0 240/-
आजीवन सदस्यःरु0 1001/-
संरक्षक सदस्य : रु0 2500/-

१.विशिष्ट सदस्यों का सचित्र संक्षिप्त परिचय एक बार प्रकाशित किया जाएगा.

२. आजीवन सदस्यों का पूर्ण जीवन परिचय सचित्र एक बार तथा प्रत्येक वर्ष २/३का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा.

३.संरक्षक सदस्यों का एक बार पूर्ण जीवन परिचय, प्रत्येक वर्ष २/३ का विज्ञापन/संदेश निःशुल्क प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार स्वरुप प्रत्येक वर्ष अलग से २००रु० तक की पुस्तकें भेंट की जाएगी.

४. सबसे अधिक सदस्य बनाने वाले व्यक्ति को प्रसार श्री व विज्ञापन देने दिलाने वाले को विज्ञापन श्री से सम्मानित किया जाएगा.

अपनी बात संतो के साथ युवतियां होना कोई नई बात नहीं

हमारे द्वारा पूज्य समाज के द्विग्दर्शक कहे जाने वाले संतो के साथ युवतियों का होना कोई नयी बात नहीं हैं. अभी पिछले वर्ष माघ मेला-०५ में मध्यप्रदेश के युवा संत के कैम्प में जब मेरे सहयोगी ने मिलने का प्रयास किया तो तथाकथित संत आग के पास अपने युवा संतो के साथ रसरेलिया बताने में मस्त थें. उनके कुछ वाक्य देखिए-'जानते हो जब रात को रास लीला चलती हैं तो युवक रासलीला कम देखते हैं उनके उनके अंग को दबाने का काम ज्यादा करते हैं. मैं भी जब पहले यहां करता था तो रात को भिन्न कैम्पों में हो रही रासलीलाओं में जाया करता था और किसी अच्छी युवती को देखकर उनके पास बैठ जाया करता था. और रास लीला कम प्रणय लीला ज्यादा किया करता था.'

हमारे सहयोगी ने आकर यह बात बताई. मैं कुछ देर बाद संत से उनके विचार लेने के लिए मिला. संत ने इलाहाबाद के एक चर्चित उद्योगपति घराने के अखबार के प्रतिनिधी का नाम व फोन नं० देकर उनसे बात करने को कहा और बोले कि वैसे अगर आपको मिलना हैं तो पांच सात दिन बाद आइए. मैं लगभग दस दिन बाद उनके कैम्प में उनसे मिलने गया. बाहर रासलीला चल रही थी. गेट पर एक वर्दी पहने, डंडा धारी खड़ा था. मैंने उससे महात्मा जी से मिलने की बात की. उसने कहा अभी स्नान कर रहे हैं. कुछ देर बाद उसने मुझे एक कुर्सी पर बैठाया. मैं बैठा रहा. तभी एक संत आया मैंने उससे अपने आने का प्रायोजन बताया तो उसने पहले आना कानी की. फिर कहा जब आपसे कहें हैं तो अंदर इधर से चले जाइए. मैं बेधड़क अपने साथी को बाहर बैठा चला गया. अंदर एक कुटिया में तथाकथित संत चार पांच युवतियों के साथ रंगरेलिया खेलने में मस्त थें. मैं अंदर का नजारा देखकर कुछ रूका और कुछ कदम वापस चलकर महाराज जी-महाराज की आवाज लगाई. तभी अंदर से आवाज आई कौन हैं कैसे अंदर चले आए. अचानक चार पांच बंदूक धारी आकर मुझे घेर लिए. खैर पत्रकार होने का परिचय जानकर मुझे बाहर बैठाया. लेकिन कैम्प से बाहर नहीं निकलने दिया. मैंने अपने साथी से संक्षिप्त में सारी बात बताई. तभी इलाहाबाद के एक अन्य रिर्पोटर आये और मुझ पर उखड़ कर परिचय पत्र की मांग करने लगे. हमारे साथी ने उनकी भाषा में ही जबाब देते हुए कहा आप कौन होते हैं परिचय पत्र देखने वाले पहले अपना परिचय पत्र दिखाइए और उनके अखबार के संपादक, व्युरो प्रमुख सहित कुछ खास पत्रकारों के पास चलकर बात करने को कहा. तब जाकर उस संवाददाता ने अपने तेवर नरम किए. और प्रेम की भाषा में अंदर चलकर बात करने को कहा. मैं अपने सहयोगी पत्रकार को बाहर बैठने को कहकर अंदर गया. मेरी खातिरदारी में पलके विछाएं कुछ युवतियों के साथ में संत महोदय खड़े थें.

मुझे कुछ न छापने के लिए लालच देने लगे. मेरे लिए फल व मिठाइयां मगवाई गई. मैंने उन्हें लेने से इनकार कर दिया. मैंने कहा जब दिमाग शांत होगा तब मैं मिलूंगा. मैं बाहर आ गया. मेरे पीछे-पीछे महात्मा जी, उनके गार्ड व पत्रकार बन्धु भी मेरी गाड़ी तक आए. मुझे अपने मीठी बातों में उलझाने का पूरा प्रयास किया. मेरे गाड़ी स्टार्ट करने से पहले ही एक झोले में कुछ फल व कुछ डब्बे मिठाइयॉं जबरदस्ती प्रसाद स्वरूप लेने की सिफारिश होने लगी.

जी.के.द्विवेदी

आपके विचार स्नेह के साथ

आजकी राजनीति गुंडो, काले धंधो वालों से प्रभावित हैं.

सम्पादक जी

विश्व स्नेह समाज का अंक ६ मिला. धन्यवाद. अपनी बात पढ़ी. द्विवेदी साहब, भारत में लोकतंत्र आया ही कब है कि उसकी हत्या हो गई? गोरों के हाथ से सत्ता लेते ही नेता मनमानियां करने लगें. नेहरू ने कश्मीर की समस्या अपने हाथ में ले ली जो अब नासूर बन गई है. आजकी राजनीति गुंडो, लुटेरों, काले धंधो वालों से प्रभावित है.

आप पत्रिका के मालिक हैं और रचना की जिम्मेदारी लेखक पर डालते हैं? यह तो कलम के साथ स्पष्ट लिखित गद्दारी है. समाज के अन्तर्गत डॉ. माानव का लेख ज्ञानवर्धक एवं नैतिक बल प्रदान करता है. रामेश्वर वैष्णव/तरूण प्रकाश को सलाम. पन्ना १७ पर कवि सम्मेलन की रिर्पोट है पढ़कर आनन्द आ गया. कविजनों को बधाई. पन्ना २६-२७ पर तीन लोक संस्कृतियों के लोकगीतों से भरपूर जीवन मिठास प्रदान की. दिवाकर गोयल की मन से मन की बात ने दिल के पावन जज़्बातों को झकझोरा! शबनम शर्मा का खाना और फैसला दोनों क्लासिकल लघु कथाएं हैं. जैन साहिब के जिन्दगी के ख्वाबों को सलाम.

धर्म सिंह गुलाटी, बी-१/१४८, फिरनी रोड, संगरूर, पंजाब

पठनीय सामग्री को पाठकों तक पहुँचाना प्रबंधन में भी आपको स्थापित करता हैं.

आदरणीय द्विवेदी जी, प्रणाम

स्नेह समाज का अक्टूबर अंक मिला. डॉ०रामकुमार वर्मा के जन्म शदी पर निकाला गया यह अंक विविध विषयों पर विभिन्न प्रकार से प्रकाश डालता हैं. आपका प्रकाशिय काल विशेषकर अर्थ की दृष्टि से तनावग्रस्त वातावरण में प्रति अंक में पठनीय सामग्री संकलित कर उनको पाठकों तक पहुँचाना प्रबंध ान के क्षेत्र में भी आपको स्थापित करता हैं. आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ्य हैं. नववर्ष की बधाई भी स्वीकारें.

सादर

राम चन्द्र शुक्ल(पूर्व जज), सम्पादक, साहित्यकार कल्याण परिषद, अवैतिक, काम्पलेक्स, निकट हाथी पार्क, रायबरेली,

इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका निकालना वास्तव में एक सराहनीय कार्य हैं.

श्रीमानजी,

आपके स्नेह कृपा द्वारा प्रेषित रा.हि.मा. विश्व स्नेह समाज का वर्ष ४, अंक६मिला. आपने जो सम्मान मुझे प्रदान किया हैं उस हेतु मैं आपका सदा सदा आभारी रहूंगा. देवरिया महोत्सव०५ में बोलते हुए सांसद मोहन सिंह, उदीयमान व ऊर्जावान विधायक उदयभान करवरिया, विभिन्न समाचार जानकर खुशी हुई है. इस पत्रिका के माध्यम से आप राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की जो निस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं वह काबिले तारीफ है. इतने कम मूल्य में इतनी उम्दा पत्रिका निकालना वास्तव में एक सराहनीय कार्य है. पढ़कर आनन्दित हुआ.

महेश प्रकाश व्यास,
लक्ष्मी कुंज, चौतीना कुआं, बीकानेरे

कृपया साथ चलें, कुछ कदम ही सही

प्रिय साथी,

मैं वाराणसी-जौनपूर की मूल निवासी हूँ. संभव व उचित प्रतीत हो तो कृपया साथ चलें, कुछ कदम ही सही. सहयोग भिजवाएं मेरी अपील को प्रकाशित कराकर सहयोगी तलाशने में तो सहायक बने ही.

राह जिलाने की भी अब निकाली जाए,
आज की बात हैं कल पे न टाली जाए।
नए ऐवनों की तामीर जरूरी हैं मगर,
पहले गिरती दीवार संभाली जाए।

निराश्रित नौनिहालों के लिए- **नीलम,**
प्रभारी ज्योति अकादमी,

आदरणीय द्विवेदीजी, सादर प्रणाम

प्रभुकृपा से आप स्वस्थ, मस्त एवं आनन्द से होगें. पत्रिका हेतु रचनाएं प्रेषित कर रहा हूँ जो मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित हैं.

पसंद आये तो इन्हें स्थान देने की अनुकम्पा कीजिएगा. शेष शुभ

रोहित यादव, रिर्पोटर, नवभारत टाइम्स, मण्डी, अटेली, हरियाणा

इलाहाबाद से प्रकाशित हर पत्रिका का स्वागत है

प्रिय महोदय, नमस्कार

विश्व स्नेह समाज का विशेषांक मिला धन्याबाद. इलाहाबाद से प्रकाशित हर पत्रिका स्वागत हैं क्योंकि मैं स्वयं १९५७-६४ तक इलाहाबाद में था. डॉ०राजकुमारी शर्मा 'राज' की ग़ज़ल अच्छी है.पत्रकारिता पर प्रकाशित आलेख पठनीय है. आज से यहॉ भी हिन्दी पत्रकारिता पर एक गोष्ठी हुई थी, जिसमें मैंने स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी पत्रकारिता पर आलेख पढ़ा था. वह छप भी गया है. समाज और राष्ट्र के प्रति पत्रकार का दायित्व बहुत बड़ा है. खोजी पत्रकारिता के नाम से जो भी हो रहा है चिन्ता का विषय है.

भवदीय

भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज'
एफ.एफ.-४, बी, ब्लॉक, सन पावर फ्लैट्स, गुरूकुल रोड, अहमदाबाद-२८००५२

आपका सम्पादकीय विश्लषेण महत्वपूर्ण है.

प्रिय भाई,
विश्व स्नेह समाज का अंक मिला. सर्वोच्च न्यायालय के दूरगामी फैसले पर आपकी सम्पादकीय विश्लेषण महत्वपूर्ण है बांगलादेशी घुसपैठियें देश की एक ज्वलंत समस्या है. राजेन्द्र जी का लेख समसामयिक है. समाचारों की कटिंग्स भी नवीनता लिए है. कुल मिला कर अंक पठनीय बन गया है. बधाई स्वीकारें.
v kidk **ज्ञानेन्द्र साज,** सम्पादक, जर्जर कष्ती, १७/१२, जयगंज, अलीगढ़-२०२००१

....

महोदय,
आपके पत्र की जानकारी ‘तुमुल तुफानी साप्ताहिक से मिली. मैं हिंदी के समस्त देश के समस्त पत्र इकत्रित करने का प्रयास कर रहा हूँ. अभी तक ३५०० पत्र पत्रिकाएं संग्रह कर चुका हूँ. यदि आप अपने पत्र का कोई सा भी अंक मुझे भेज सके तो अनुग्रह मानूंगा.
रामगोपाल शर्मा ‘बाल‘, २१, सिलावट गली, जनकूपुरा, मन्दसौर, ४५८००२, म.प्र.

....

मोहतरमा जी अदाब
जुलाई व सितम्बर का अंक एक साथ हासिल हुआ. जुलाई के अंक में फैयाज साहब का लेख पसंद आया. साथ-साथ खाकी साहब की गज़ल भी अच्छी लगी. भगवान दास जैन की गज़ल भी काफी पसन्द आई. सितम्बर अंक में कहानी ‘कितना गहरा पानी भी अच्छी लगी. उम्मीद है आप यूं ही साहित्यिक सेवा करते रहेगें. अगले अंक के इंतजार में.
डॉ० मुहम्मद मुबीनकैफ, परसौना, बरेली, उ०प्र०

....

प्रिय भाई, अभिवादन लें.
दीपावली के प्रेरक प्रकाश पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकारें. अपनी सद्यः प्रकाशित काव्य कृति ‘नेति नेति नियति‘ की एक प्रति अलग साधारण डाक से समीक्षार्थ प्रेषित कर रहा हूँ.
राजेन्द्र तृशित,१०४ए/१६५, रामबाग, कानपुर-२०००१२

....

आदरणेय द्विवेदीजी
आशा है ईश कृपा से स्वस्थ होगें. आप द्वारा प्रेषित पत्रिका का जुलाई अंक मिला. धन्यवाद स्वीकारें. मात्र तीन रूपये मूल्य रखकर आप वास्तव में समाज ही महती सेवा कर रहे हैं.
अपना स्नेह भाजन बनाने के लिए एक बारपुनः आपको कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा हूँ.
ओमप्रकाश मंजूल, पीलीभीत, उ.प्र.

....

मा. सम्पादक जी
मैं एक हिंदी प्रेमी नागरिक हूं. हिंदी राष्ट्रभाषा संबंधी अधिक से अधिक जानकारी रखने की इच्छा रहती है. सो आप स्नेह पत्रिका का सालाना चंदा लिखकर भेज दीजिए. धन्यवाद.
आ०स०तरवड़े, बालाजी गली, मु.पो. सिंदखेड राजा, जिला-बुलडाणा, महाराष्ट्र

....

यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से हटकर है

सेवा में,श्रीमान सम्पादक महोदय,
महोदय, मैंने आपकी पत्रिका का एक अंक पड़ा. पत्रिका को पढ़कर ऐसा लगा कि यह पत्रिका कुछ नया दे रही है साथ ही यह पत्रिका अन्य पत्रिकाओं से हटकर भी है. मैं भी दिल्ली से प्रकाशित नगर परिक्रमा पाक्षिक का अलीगढ़ से जिला संवाददाता हूँ.अतः मुझे आपकी पत्रिका की खास जरूरत है. आपसे विनम्र प्रार्थना है कि मुझे नियमित पत्रिका भेजवाने का कष्ट करें. आपकी अति कृपा होगी.
प्रवीन कुमार, संवाददाता, नगरपरिक्रमा, गांव सफेद का पुरा, पो० साधू आश्रम, हरथुआगंज, अलीगढ़-२०२१२५

....

प्रिय बन्धुवर,
युग परिवर्तन की बेला में, दीपावली आपको सपरिवार मंगलमय हो।
शिव की शक्ति,
मीरा की भक्ति,
गणेश की सिद्धि,
चाणक्य की बुद्धि,
शारदा का ज्ञान,
कर्ण का दान,
राम की मर्यादा,
भीष्म का वादा,
हरिश्चन्द्र की सत्यता,
कुबेर की सम्पन्नता,
लक्ष्मी की अनुकम्पा प्राप्त हो,
यही हमारी शुभकामनाएँ है.
श्रीनिवास के.पंचारिया,से.नि. जगदीश मंदिर के पास, गुलेदगुड्ड, कर्नाटक-५८७२०३

....

माननीय सम्पादक महोदय,
सादराभिवादन,
साहित्कार कल्याण परिषद पत्रिका रायबरेली के सितम्बर०५ के अंक के सौजन्य से आपका परिचय मिला. बड़ी खुशी हुई. कृपया ‘विश्व स्नेह समाज‘ पत्रिका का नवीनतम अंक अवलोकनार्थ भिजवानें की कृपा करें. बहुत आभार रहेगा.
पत्र-पत्रिकाओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के सहयोग की अत्यन्त उदार एवं उपयोगी पृष्ठ भूमि को समुचित सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए निरन्तर सम्पर्क एवं सहयोग बनाएं रक्खें.
आपके क्षेत्र से सम्बंधित तथा आपकी जानकारी में यदि कोई अन्य पत्र-पत्रिकायें हो तो कृपा पूर्वक उनका नाम व पूरा पता आदि भी भिजवायें. ताकि पारस्परिक सम्पर्क के क्षेत्र को और अधिक विस्तृत किया जा सकें. मेरी योजना पत्र-पत्रिकाओं की एक बृहद निर्देशिका प्रकाशित करने की हैं.

बहुत सम्भव हैं निकट में यह साकार रूप धारण कर सके.
अग्रिम धन्यवाद सहित तथा अविलंब पत्रोत्तर एवं पत्रिका की प्रतीक्षा में.
उत्तरा भिलाषी-
बी.एन.मुद्गिल, प्र.स. समाचार संघ,प्रेस सदन, गद्दी खेड़ी, रोहतक-०१, हरियाणा

.....

आदरणीय द्विवेदी जी
सादर प्रणाम, नमन वन्दन
पत्रिका का अंक मिला. पढ़ा एक विशिष्ट सामग्री युक्त अंक में आपने सब कुछ समाहित किया है. इस हेतू साधुवाद. मैं ग्रामीण क्षेत्र में रह रहा हूँ. ३५ वर्षो से निरन्तर लिख पढ़ रहा हूँ. ८०० से ज्यादा रचनाएं प्रकाशित है. **डॉ० ओमहरित**, फागी, जयपुर-३०३००५

.....

सम्पादक जी, सप्रेम बन्दे
आपकी पत्रिका अंक मिला. अंक बहोत ही खूबसूरती से ओतप्रोत भरा है. इतनी छोटी सी पत्रिका में प्रतियोगिताओं के साथ-साथ ढेर सारी जानकारी है. केवल तीन रुपये लेकर आपने हिन्दी प्रेमियों की सेवा का बीड़ा उठाया यह ज्ञात हुआ.
अभिनव ओझा लिखित 'जायज कमाई' पढ़कर बेहद गदगद हुआ. हराम की कमाई खाने के बजाय मरना बेहत्तर हैं.
कथा, कविताएं भी उतनी ही पठनीय संग्रहणीय है.
अपनी बात में 'भ्रष्ट्राचार शिष्टाचार का पर्यायवाची से पता चला कि भ्रष्टाचार को मूल से उखाड़ना ही धरती मां को बचाना है.**चंद्रशेखार देवाजी खुटेमाटे,**एम.क्यू ३४१, निरूजईएचसीएल कॉलोनी, मु. सुंदर नगर, पो. पुनवट, जिला-रावलमाठ, विदर्भ, महाराष्ट्र-४४५३०४
आपके विचारों का स्वागत हैं. कृपया पत्रिका के अंक आपको कैसे लिखते रहें.

वरिष्ठ साहित्यकार
श्री श्याम विद्यार्थी के इलाहाबाद दूरदर्शन के वरिष्ठ निदेशक
के पद पर प्रोन्नत होने पर हार्दिक बधाई.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

सभी पाठकों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ

आरती मद्धेशिया
प्रधानाचार्या
स्व0किशोरी देवी बाल विद्या मंदिर, तिवारीपुर, बरहज, देवरिया

बिल्कुल मुफ्त

किसी भाई या बहन को बवासीर की नई या पुरानी षिकायत हो तो आयुर्वेदिक दवा और सेवन विधि मुफ्त घर बैठे मंगवाए. कई लोगों और डॉक्टरों ने भी इसका अच्छा लाभ उठाया है।
संकोच त्यागिये और हमें आज ही लिखिये एवं रोग हो तो उससे मुक्त होकर मुस्कुराइयें.
वी.नारायण स्वामी, 52/175, बेलाला स्ट्रीट, पुरूश वाकम, चेन्नई–600084

जेनिथ परिवार की तरफ

से सभी नगरवासियों को होली की हार्दिक बधाई

संयोजक
अशगर अली, फायानाथ

प्रबंधक
सुरेश यादव

अपराध

संत या असंत

उत्तर प्रदेश में खूनी खेल अनवरत जारी

- संत के चोले में असंत स्वामी सदानन्द पर हत्या सहित कुल 15 मुकदमें दर्ज थें.
- संत की गाड़ी में केवल 20 से 25 वर्ष उम्र की युवतियां ही सवार.ड्राईवर भी 21 वर्षीया युवती थी
- शक की सुई इसौली सदर, सुल्तानपुर से सपा विधायक चद्रभान सिंह की ओर
- वाराणसी के पत्रकार स्व0 ईश्वर देव मिश्र पर हमला करवाने का आरेप

देवरिया जिले के मूल निवासी स्वामी सदानंद की दिन दहाड़े हत्या

उत्तर प्रदेश से अपराधों की सिलसिला जैसे खत्म होने का नाम हीं नहीं लेता. जबसे वर्तमान सरकार सत्तासीन हुई हैं अपराधों की जैसे बाढ़ आ गयी हो. इलाहाबाद मण्डल इनमें शायद सबसे आगे निकलता साबित होता है. अभी पिछले वर्ष २५ जनवरी को बसपा विधायक राजू पाल की हत्या जिस तरीके से की गयी थी उसी तरह १० फरवरी को सांयकाल हंडिया इलाके में एके-४७ से लैस शूटरों ने गाड़ियों के काफिले पर ताबड़तोड़ गोलियॉ बरसाकर बहुचर्चित संत ज्ञानेश्वर स्वामी सदानंद समेत आठ लोगों की हत्या कर दी गयी. पॉच यूवतियॉ गंभीर रूप से जख्मी हैं. मरने वालों में स्वामी सदानंद-५८, महात्मा ओमप्रकाश-५५, नीलम-२२, पुष्पा-२०, पूजा-२२, गंगा-२०, रामचंद्र-३५ और मिथिलेश-४० वर्ष हैं. ये सभी माघ मेला, इलाहाबाद से घाटमपुर,वाराणसी स्थित मोक्षदाता धाम जा रहे थें. हमलावार दो गाड़ियों में सवार थें. हमले के बाद बदमाश अपनी टाटा

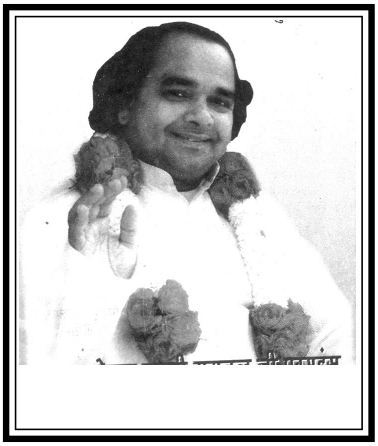

विक्टा गाड़ी को सियाडीह गांव के पास छोड़कर भाग गये. संत के काफिले में पांच गाड़िया थी. सबसे आगे सफारी में सदानन्द बैठे थे, सायं ६ बजे बगहा रेलवे क्रांसिग के पास से काफिला गुजर रहा था तभी संत की गाड़ी को ओवरटेक कर धुॅवाधार गोलियॉ बरसने लगी. सफारी चला रही दिव्या को गोली लगने से गाड़ी अनियंत्रित होकर सड़के के किनारे गड्ढ़ें में चली गयी. काफिले में पीछे चल रही एस्टीम और मारूति में बैठे लोग उतरकर संत ज्ञानेश्वर की तरफ दौड़े तो पीछे आई गाड़ी में सवार शूटरों ने उन्हें भी गोलियों का निशाना बनाया. गोलियों की बौछार लगभग दस मिनट तक जारी रही.

उत्तर प्रदेश देवरिया जिले के तरकुलवा थानान्तर्गत पिपरा भुवाल गांव के रहने वाले श्री कृष्ण तिवारी ने अपने तीसरे पुत्र का नाम सदानंद त्रिपाठी रक्खा था. पढ़ाई लिखाई गांव के पास ही शुरू हुई. १९६६ में देवरिया के राजकीय इंटर कॉलेज से हाईस्कूल, १९६८ में तरकुलवा देवरिया के नरेद्र देव कॉलेज से इंटर, संत विनोबा डिग्री कॉलेज, देवरिया से स्नातक और १९७२ में हरिश्चंद्र डिग्री कॉलेज, वाराणसी से विधि की पढ़ाई पूरी करने के बाद १९७४ में सिविल कोर्ट देवरिया में वकालत शुरू की लेकिन सफलता नहीं मिली. वाकपटु सदानंद ने यही पर चकबंदी अधिकारी की नौकरी कर ली. लेकिन आध्यात्मिक रूचि के कारण नौकरी ज्यादा दिन नहीं चली. उन्होंने

हिस्ट्रीशीट

1981–गोपालगंज में 363,366, 368 और 498 के तहत अभियोग दर्ज

1981–कोतवाली देवरिया में 302 और 120 बी के तहत मुकदमा

1982– गोपालगंज के ऊंचका गांव थाने में 302 और 34 के तहत रिर्पोट

1982–गोपालगंज में हीं 4/5 विस्फोटक पदार्थ अधिनियम के अंतर्गत मुकदमा

1982–गोपालगंज में 39/44 विद्युत अधिनियम और 279 के तहत मुकदमा

1982–गोपालगंज में 379 और 120 बी के तहत मुकदमा दर्ज

1983–गोपालगंज के थान टाउन में 302, 120बी, 109, 114 और 3/5 विस्फोटक पदार्थ अधिनियम के अंतर्गत मुकदमा

(डीएम हत्याकांड में गोपालगंज के सेशन कोर्ट से संत ज्ञानेश्वर को मृत्युदंड की सजा हुई, जिसके विरुद्ध अपील पर हाईकोर्ट ने फांसी को उम्र कैद में तब्दील कर दिया. इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील की गई और स्वामी को राहत मिली.)

1999–कोतवाली सुल्तानपुर में 302 और 120बी के तहत मुकदमा

संत का वेश धर लिया और धर्म प्रचार में लग गए. इस दौरान वे संत ज्ञानेश्वर उर्फ सदानंद के नाम से मशहूर हुए. बिहार राज्य के उचका गांव में जब उन्होनें अमरपुरी आश्रम की स्थापना की तो चर्चाओं के केंद्र में आ गए. इस आश्रम पर किसानों की आपत्ति और तरह-तरह के आरोप लगते रहें. इसके बाद गोपालगंज-बिहार में इनका आश्रम बना और नाम दिया गया सतपरी आश्रम.

स्वामी सदानंद ने जहां भी आश्रम बनाया वह विवादों से बच नहीं सकें. सुल्तानपुर का आश्रम हो या बाराबंकी का. विवाद पीछा नहीं छोड़ता. सुल्तानपुर के मायंग में मठ हैं, जो अक्सर विवादों में घिरा रहा. आरोप है कि स्वामी सदानंद इस मठ में गलत हरकतों को अंजाम देते थे. इसौली के निर्दलीय विधायक इंद्रभद्र सिंह ने इसकी शिकायत की तो मठ पर पुलिस ने छापा मारा. इसी रंजिश वश २१ जनवरी १९९८ को तत्कालीन पूर्व विधायक इंद्रभद्र सिंह की दीवानी चौराहे पर सरेआम बम मारकर हत्या कर दी गई. घटना के बाद गिरफ्तार एक हमलावार ने स्वामी सदानंद पर हत्या करवाने की बात कबूली थी. दूसरी ओर संत का कहना था कि विधायक की निगाह उनके मठ की जमीन पर थी. अदालत में उनके खिलाफ आरोप पत्र दाखिल हो चुका हैं और मामले का विचारण चल रहा है. हत्या का दूसरा आरोप बिहार से जुड़ा है. गोपालगंज के जिलाधिकारी महेश प्रसाद शर्मा की ११ अप्रैल १९८३ को हत्या कर दी गई. आरोप है कि यह कत्ल सदानंद ने करवाया. हालांकि हत्या के समय सदानंद जेल में थे. तल्ख मिजाज के स्वामी सदानंद को जेल की हवा भी खानी पड़ी. स्वामी सदानंद पर वाराणसी के पत्रकार स्व. ईश्वरदेव मिश्र पर हमले की एफ.आई आर भी दर्ज है.

मर्जी के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता था

संत ज्ञानेश्वर स्वामी सदानंद का माया संसार कुछ ऐसा था कि वहां बिना इजाजत के किसी का प्रवेश नहीं हो सकता था. नाफरमानी उन्हें कत्तई बरदाश्त नही थी. किसी ने यदि अपनी सीमाओं के बाहर जाकर अतिक्रमण की कोशिश की तो उसे कभी भी स्वामी के भयानक कोप का भाजन बनना पड़ सकता था.

एक भक्त बताता हैं कि सदानंद के साथ कौन कहां जाएगा, यह वह खुद तय करते थे. किसे आश्रम में रहना है और किसे उनके साथ, इसका निर्णय कोई दूसरा नहीं कर सकता था. वह बताता है कि यदि कोई उनके मायालोक में चला गया तो उसकी खैर नहीं थी. उसे तो अपने किए की सजा मिलनी ही थी. दरअसल इतना कुछ सफेद-स्याह था कि उनके राजफाश होने का खतरा बना रहता था. सुल्तानपुर में जो आश्रम है उसमें भी ऐसी ही अवांछित गतिविधियों का आरोप लगाया गया था जिसके खिलाफ तत्कालीन जिलाधिकारी ने कार्यवाही की थी. इसी चर्चा से खफा होकर स्वामी ने पूर्व विधायक इंद्रभद्र सिंह की हत्या करा दी थी. ऐसे ही गोपालगंज के जिलाधिकारी महेश शर्मा की हत्या बम मारकर अप्रैल १९८३ में करा दी गई. दोनों हत्याओं में एक समानता थी, ज्ञानेश्वर का नाम आया.

बड़ बोले ज्ञानेश्वर संत नहीं बल्कि असंत थे

संत ज्ञानेश्वर की हत्या से एक साथ कई सवाल उपजे हैं., पर इनका सबका निहितार्थ एक है ज्ञानेश्वर स्वामी सदानंद हो सकते हैं, संत नहीं. उनका स्वयं का ईश्वर रूप कहना, गंगा, गौ, गायत्री की निंदा करना, अन्य संतो को तुच्छ समझना और एक दो नहीं बड़बोलेपन की कई–कई बातें करना, उन्हें ईश्वर तो क्या संतो की परिभाषा से दूर ही रखती हैं.

संत समाज इस निर्मम हत्या की निंदा तो करता हैं, पर दुखी भी हो ऐसा नहीं. लोगों को उनकी बातें अनर्गल प्रलाप से ज्यादा कुछ नहीं लगती क्योंकि वह कहते थें कि न भगवान कण–कण में रहता हैं और न ही किसी के शरीर में.

स्वामी शंकराश्रम का कहना था कि सिर्फ वेश धारण करने से कोई संत नहीं हो जाता. संत एक चरित्र है, एक आवरण हैं. वह स्वयं को भगवान कहते थें., जो सनातन संस्कृति के विपरित है.

माघ मेला क्षेत्र के संत ज्ञानेश्वर के पड़ोसियों ने न–न करते हुए भी मन की व्यथा कही. सद्गृहस्थ संत स्वामी परमानंद का कहना था कि विरक्त संन्यासियों को कामिनी कंचन के चक्कर में पड़ना शोभा नहीं देता, यही सब उन्हें ले डूबा.उनकी कार्यशैली संतो की शैली से एकदम विपरीत थी.

वहीं स्वामी अनंताचार्य ने कहा ज्ञानेश्वर भी काशी के राजा पौंड्रक की तरह स्वयं को कृष्ण कहते थे इसीलिए जो हश्र पौड्रक का हुआ, वहीं उनका भी. भगवान श्री कृष्ण की तरह ही वह भी गोपियें के साथ विहार तथा संतों, गंगा, भगवान की निंदा करते थे. पर भगवान बनते ही उनकी लीला समाप्त हो गई.

प्रकृति समाचार

आओ सुनामी की सुने

नरेष शाण्डिल्य

व्यक्ति ने अपने को व्यक्त करने के लिए अनेक भाषाओं का उपयोग किया है. लेकिन प्रकृति ने अपने को व्यक्त करने के लिए हमेशा एक ही भाषा का उपयोग किया है, वह है –मौन, यही उसकी सर्वयुगीय एवं सार्वभौमिक भाषा है. आओ सुनामी के माध्यम से प्रकृति की भाषा को सुनने समझने की कोशिश करते है–

पहली बात- मैं यहॉ सुनामी के माध्यम से लाखों व्यक्तियों की मृत्यु की चर्चा नहीं कर रहा क्योंकि आजकल तो बच्चे भी जानते हैं कि आत्मा मरेगी नहीं, शरीर बचेगा नहीं, फिर डर काहे का. वैसे भी लाखों व्यक्ति रोज घरों अस्पतालों में मर रहे हैं, फिर मरने वाले को क्या फर्क पड़ता है कि घर के किसी कोने में मरा या समुद्र किनारें. फर्क तो केवल जीवित को ही पड़ता. यह पत्र भी उन्हीं जीवित व्यक्तियों के लिए है, जो इस सुनामी के माध्यम से प्रकृति की भाषा को सुनना समझना चाहते हैं, और जीवन्त रहना चाहते हैं. क्योंकि प्रकृति को सुने-समझे वगैर जीवन सम्भव नहीं हैं और इतिहास भी गवाह है कि जिस जिस ने भी प्रकृति की भाषा को सुन-समझ लिया, वह आज तक, मर कर भी नहीं मरा. और जिस-जिसने इसको नहीं समझा, वह आज भी, जीवित होते हुए भी, पल-पल मर रहा हैं. यानी, मरा ही हुआ है.

दूसरी बात-मैं यहॉ सुनामी के माध्यम से उन लाखों व्यक्तियों, जो बेघर हो गये, उनकी भी चर्चा नहीं कर रहा. क्योंकि टी.वी. एवं अखबारों ने पहले ही जरूरत से ज्यादा चर्चा एवं अपील कर रखी है. फिर, यह भी किसी से छिपा नहीं है कि-जिन्हें बेघरों के लिए घर का इन्तजाम करना है, वे किसी चर्चा या अपील का इंतजार नहीं करेगें और जिसने अपने घर में छिप कर बैठने का फैसला कर ही लिया हो, उसने यह भी इन्तजाम कर लिया होगा कि ऐसी किसी चर्चा या अपील से कैसे बचना हैं. लेकिन! हम प्रकृति की सुनामीयों से बचने के लिए किस घर में छिपेगें? क्योंकि सारी प्रकृति एक हैं, कल हमारे घरो में, ना जाने किस रूप में प्रवेश कर जायें? तो, क्यों ना आज ही प्रकृति की मौन भाषा को सुन लिया जाये, समझ लिया जायें. आखिर क्या कहना चाहती हैं यह प्रकृति?

तीसरी बात- भारतीय संस्कृति में प्रकृति को मां कहा गया है, आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी इसके जीवन्त होने की पुष्टि अपने रूप में कर दी हैं. लेकिन! क्या वाकई हम प्रकृति मां के साथ, मां जैसा व्यवहार कर रहे हैं? क्या वास्तव में आधुनिक वैज्ञानिक जीवन्त प्रकृति के साथ न्याय कर रहे हैं? आज यह बात किसी से भी छिपी नहीं है कि, आधुनिक मनुष्य प्रकृति मां की छाती से दूध नहीं, बल्कि खून पीने लगा है और विश्व के ७० प्रतिशत आधुनिक वैज्ञानिक इस बात की खोज में लगे हैं कि उनकी जीवन्त प्रकृति मां में, कहां-कहां, क्या-क्या छिपा पड़ा है एवं उसे कैसे आधुनिक टेक्नोलॉजी द्वारा खाने-पीने लायक बनाया जा सकता हैं. मनुष्य केवल अपने खाने-पीने तक सीमित रहता तो फिर भी गनीमत होती. मनुष्य तो अपनी बनाई मशीनों को भी इसी प्रकृति मां का खून, मांस मज्जा (पेट्रोल, डीजल, गैसा, कोयला) खूब धड़ल्ले से खिला पिला रहा हैं. मनुष्य की जनसंख्या तो फिर भी नौ महीने के हिसाब से बढ़ती हैं, मशीनों की उत्पादन संख्या पर तो कोई रोक-टोक हीं नही हैं और इसी को ही मनुष्य अपना विकास मानकर चल रहा हैं. तो क्या प्रकृति मां, इस सुनामी के माध्यम से व्यक्ति को विकास की दिशा परिवर्तन के लिये तो नहीं कह रही? कृपया सुने समझें.

चौथी बात-भारतीय सनातन परम्परा मे व्यक्ति को सृश्टि बनाने पर बहुत जोर दिया हैं. भारतीय ऋषियों को इस कार्य में व्यक्तिगत सफलतायें भी मिलती रही हैं. वैदिक ऋषि की घोषणा- वसुधैव कुटुम्बकम, कृष्ण का समग्र जीवन, बुद्ध की कण-कण मात्र के लिए करूणा, दयानन्द का सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का संकल्प, अरविन्द का अति मानस योग, आदि सभी इसी ओर प्रयासरत थें. लेकिन अब ऐसा लगता है कि, यह कार्य अब प्रकृति मां ने स्वयं अपने हाथ में ले लिया हैं. अब व्यक्ति के सामने बचने का कोई चारा नहीं हैं. कृष्ण बुद्ध, दयानन्द, अरविन्द की पूजा कर-करके तो हम अपने को बचाते रहे हैं. लेकिन! प्रकृति मां से कैसे बचेगें? क्योंकि प्रकृति व्यक्ति के बाहर हीं नहीं, व्यक्ति के अन्दर भी हैं. वैदिक ऋषि ने कहा भी है कि-यत् पिण्डे तत् ब्रहाण्डे. क्या गारण्टी है कि जो सुनामी आज दूर समुन्द्र में आई है, वह कल हमारे अन्दर से ना फूट पड़े? क्या यह सही समय नहीं है कि, हम प्रकृति मां के सुनामी रूपी संदेश को आज समय रहते सुन लें? और व्यक्ति से सृष्टि बनने की ओर अग्रसर हों.

अन्तिम बात-अब तक के इतिहास में व्यक्ति केन्द्र में था, इसलिए सारा पार्थिव जीवन व्यक्ति के चारों ओर घूम रहा था. आज प्रकृति मां केन्द्र में हैं. आज व्यक्ति की हालत वैसे ही हैं, जैसे सत्ता से बाहर कर दिये राजा की. अब केवल व्यक्ति को सृष्ट बनकर ही प्रकृति मां की शरण मिल सकती हैं और सृष्टि बनने के लिए उसे अपनी सारी सीमिताएँ त्याग कर असीमित बनना होगा. क्योंकि प्रकृति मां असीमित हैं, इसलिए वह अपने पुत्र व्यक्ति को सृष्टि बनने तक सुनामी रूपी संदेश देती रहेगी.

महामंत्री, अभिनव विश्व अभियान २८०, बैंक एन्क्लेव, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-११००९२,

मुद्दा

वे कुत्ते नहीं हैं जनाब!

✍अरूण कुमार अग्रवाल

प्रिंट मीडिया में ग्रामीण संवाददाताओं की आज भी बड़ी दुर्दशा है. इक्का दुक्का अख़बारों को छोड़कर बाकी कोई भी संस्थान इन संवाददाताओं की मेहनत के एवज में उन्हें फूटी कौड़ी भी नहीं दे रहा है. आये दिन उन्हें झिड़कियां भी सुनने को मिल जाती है, वह अलग से. कई संस्थानों में तो ये ग्रामीण संवाददाता यूं फटकारें व दुत्कारें जाते हैं, मानों वे इंसान नहीं आवारा कुत्ते हैं.

यह सर्वविदित है कि कोई भी अखबार, बगैर ग्रामीण संवाददाताओं के अपना काम नहीं चला सकतें. हिन्दी अख़बारों में जिलों की तहसीलों, ब्लाक मुख्यालयों, कस्बों और यहां तक कि कहीं-कहीं छोटी-मोटी आबादी वाले बाजारों तक में संवाददाता तैनात हैं. उत्तर प्रदेश में ज्यादातर हिन्दी अख़बार ऐसे हैं, जिनके पास ग्रामीण संवाददाताओ की लम्बी फेहरिश्त हैं. ये संवाददाता अपनी क्षमता के मुताबिक काम भी कर रहे हैं. कभी कभार तो उनकी खबरें शहरी रिर्पोटरों को भी मात करती हैं, पर बदले में कोई उन्हें 'थैंक यू' कहने तक की जरूरत नहीं महसूस करता.

सच तो यह हैं कि हिन्दी अखबारों में ग्रमीण संवाददाता उसकी रीढ़ की हड्डी होते हैं. ये हिन्दी अखबार जितना शहरों में बेचे जाते हैं, देहात में उससे कम नहीं बिकते. दूसरी तरफ शहरों में तो अखबारों के वेतनभोगी रिर्पोटर बैठे हुए हैं और ग्रामीण इलाकों में यह जिम्मा अवैतनिक रिर्पोटरों के हवाले कर दिया गया हैं. ये संवाददाता अपने घर परिवार की जिम्मेदारियों का वहन करते हुए अखबारों को सामयिकी खबरें भेजने का काम बखूबी कर रहे हैं और इसी के चलते ये अखबार ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी पैठ बनाये हुए हैं.

ग्रामीण इलाकों में इन अखबारों का प्रतिनिधित्व कर रहे लोगों के पास आय के अपने स्रोत है, उन्हें तो कोई खास परेशानी नहीं है. ऐसे लोग अखबारों से जुड़कर समाज में अपनी

अलग पहचान बनाने के प्रयास में लगे होते है. जिनके पास आय का कोई साधन नहीं है और वे बेरोजगारी की मार झेल रहे है. उनका ख्वाब यह रहता है कि कम से कम इसी बहाने उनका दायरा बढ़ेगा और वे अपना काम काज आसानी से चला सकेगें. ये संवाददाता सरकारी और गैर सरकारी विभागों तथा ग्रामीण क्षेत्र के नये-नये घटनाक्रमों से अपने अखबारों के जरिये लोगों को अवगत कराते हैं. कभी कभार ये संवाददाता क्राइम रिर्पोट में भी अब्बल साबित होते हैं. सभी जानते है कि अपराधों की ढेर सारी वारदातों की प्राथमिकी थानों में दर्ज नहीं होती. इनका भंडाफोड़ शहर में बैठे रिर्पोटर के बजाय ग्रामीण संवाददाता ही कर सकते हैं. शहरी रिर्पोटर तो पुलिस कंट्रोल रूम, थानों और मर्चुरी से मिली रिर्पोटों तक ही सीमित रहते हैं.

ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत इन संवाददाताओं के समक्ष खतरे भी बहुत है. शहरों में धड़ल्ले से रिर्पोटिंग के बावजूद जल्दी किसी रिर्पोटर पर कोई हाथ नहीं डाल सकता, जबकि ग्रामीण परिवेश इससे अलग ही है. देखा गया हैं कि जरा जरा सी बात में गांवो में झगड़े बढ़ते है.पुलिस की दखलदांजी भी ग्रामीण इलाकों में कुछ ज्यादा ही है. इसी के चलते ग्रामीण संवाददाता आये दिन पिटते है, उनके खिलाफ फर्जी मुकदमें तक कायम होते है, पर अफसोस इस बात का है कि जिला मुख्यालयों पर बैठे पत्रकार अपने ग्रामीण भाइयों की मदद के लिए कुछ नहीं कर पातें.

हालात यहीं तक सीमित हो तो और बात है. अब तो हालत यह है कि ग्रामीण संवाददाताओं को बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाने लगा है. शहरी रिर्पोटर लाख निकम्मा हो, पर वह ग्रामीण क्षेत्र के योग्य संवाददाता को ऐसी दुत्कारती निगाह से देखता है, मानों यह कोई अवांछित प्राणी हो. खबरे यदि छूट रही हो तो संवाददाता को लताड़ सुननी ही पड़ेगी, अब तो कुछ संस्थान उन्हें सर्कुलेशन तथा विज्ञापन के काम में भी लगाने को बेताब रहते है. कोई संवाददाता यदि सर्कुलेशन और विज्ञापन के मामले में फिसड्डी है तो वह लाख अच्छी खबर लिखे, उसकी कोई कद्र नहीं हो सकती.

यही उपेक्षा भाव ग्रामीण संवाददाताओं को कुंठित कर रहा है. वे ईमानदारी

से खबर लिखना भी चाहे तो नहीं लिख पा रहे है. कभी उन पर आर्थिक दबाब प्रभावी होता है, तो कभी कुंठित मनोभावना और कभी कभी संस्थान की उपेक्षा. फिर भी बेमन से ही सही, वे खबरे भेजते है.

ऐसा भी नहीं है कि सारे के सारे ग्रामीण संवाददाता कुठित ही हैं. कईयों की दुकानें अच्छी चल रही है. कई तो पेशेवर हो चुके हैं और एक ही नहीं कई अखबारों में समाचार प्रेषण का जिम्मा संभाल रहे है. तर्जुबा होने से वे अच्छा लिखते है और उनके सम्पर्क सूत्र भी बढ़िया है. कई की दिलचस्पी कोटा परमिट का फायदा लेने में रहती है, हालांकि यही बात शहरी रिर्पोटरों मे से भी बहुतों पर लागू होती है.

जो भी हो, विचारणीय मुद्दा यह है कि आखिर ग्रामीण संवाददाताओं की इतनी उपेक्षा क्यो है. कहने का तात्पर्य यह कि ग्रामीण संवाददाता को हेय दृष्टि से देखना अपनी अखबार की रीढ़ की हड्डी तोड़ने जैसा ही हैं. उनका शोषण तो हरगिज नहीं होना चाहिए. उचित यह होगा कि प्रकाशन संस्थान अपनी सुविधा और क्षमता के अनुसार अपने ग्रामीण संवाददाताओं को कुछ न कुछ दें. अंग्रेजी अखबारों की बात अलग है. उनको ग्रामीण इलाकों से कुछ खास लगाव नहीं हो सकता. इन अखबारों को देहात में पढ़ता ही कौन है. इसीलिए ग्रामीण संवाददाता अंग्रेजी अखबारों की जरूरत नहीं बन पाये है.

(यह लेख इलाहाबाद से विगत ३१ वर्षो से प्रकाशित अंतरराष्ट्रीय श्रोता समाचार, पाक्षिक,जो २७ जवाहर स्कावयर, इलाहाबाद की एक सम्पादकीय टिप्पणी है. इसके संपादक इलाहाबाद के प्रसिद्ध पर्यावरणविद और पत्रकारों के हित की आवाज उठाने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पत्रकार है.

हास्य-विनोद

फांसी कबूल है पर शादी नहीं

शिवम् ने अपनी शिक्षा पूरी की और नौकरी पाने के लिए काफी प्रयत्न किया, किन्तु नौकरी थी कि मिली नहीं, और बिना धन के विवाह भी

सम्भव न था, अन्ततः शिवम् ने चोरी कर धन कमानें और धन कमाकर विवाह करने की योजना बनायी और एक रात निकल पड़ा चोरी करनें. चोपड़ा साहब का मकान खुला देखा और घर में घुसकर सबके सोने का इन्तजार करने लगा. देर रात चोपड़ा साहब घर पहुंचे, अभी वे घर में प्रविष्ट ही हो पाये थें कि एक उनकी हम उम्र महिला निकट पहुंची और अपने साथ चलने का आग्रह करने लगी. इतने में दो और उसी उम्र की महिलाएं चोपड़ा साहब को अपने साथ ले जाने का यत्न करने लगी निरूपाय चोपड़ा साहब मौन साधे खड़े रहे और औरते लड़ती रही. इसी दौरान पता चला कि वे तीनों चोपड़ा साहब की धर्म पत्नियां हैं, और चोपड़ा साहब उन तीनों के इकलौते पति.

खैर, चोपड़ा साहब की दो पत्नियॉ एक एक हाथ पकड़ कर घसीट रही थी, इतने में तीसरी ने उन्हें धकेल दिया और सीने पर बैठ कर गरजी, अब ले जाओं तुम दोनों इन्हें, मैं अब यहां से नही हटने वाली. शिवम् चोरी करने के लिए परिवार के सोने की प्रतिक्षा करते-करते तमाशा देख रहा था.

अन्ततः समय बीतता गया, असहाय चोपड़ा साहब जमीन पर पड़े रहे, पर पत्नी सीने पर तथा अन्य दोनों एक-एक हाथ पर कब्जा जमाये रही, इस तरह रात बीत गयी. प्रातः का समय हो गया, पड़ोसी जाग गये. घर का भयंकर शोर सुन कर पड़ोसी दरवाजें पर एकत्र हो गये. पत्नियां व्यस्त थी, और पति बेहोश. मजबूर चोर के रूप में घुसे शिवम् ने ही दरवाजा खोला पड़ोसियों ने हारे नेता की तरह बेहाल चोपड़ा साहब को देखा, उन्हें उठाया, पत्नियों से बचाया और अस्पताल के लिए रवाना किया, उन्ही में कुछ पड़ोसियों ने शिवम् से परिचय जानना चाहा, इस पर शिवम् ने सारा किस्सा सच-सच सुना डाला. जिसपर पड़ोसियों ने उसे थाने को और थाने ने उसे जेल भेज दिया.

शिवम् जज के सामने प्रस्तुत हुआ,

जज-क्या तुमने चोरी की?

शिवम्-नहीं हुजूर.

जज-क्यों नहीं की तुमने चोरी.

शिवम्-घरवालें सोये ही नहीं.

जज-न सोने की क्या वजह थी.

शिवम्- हुजूर, वजह तो उनकी तीन पत्नियां थी जो अपने पास रात को रहने के लिए चोपड़ा से जिद्द कर रही थी, इसी जिद्द में वे बुरी तरह घायल हो गये और रात भर झगड़ा चलता रहा और मुझे हुजूर चोरी करने का मौका ही नहीं मिला.

जज-अच्छा अब बताओं तुम्हें क्या सजा दी जाये, क्योंकि दोष साफ जाहिर हैं.

शिवमः- हुजूर, मुझे सारी सजा मंजूर हैं, मैं फांसी पर चढ़ने को भी तैयार हूँ, लेकिन हुजूर मैंने आजीवन कुआरा रहने का फैसला किया है, हुजूर मुझे विवाह करने का आदेश मत दीजिएगा, बस.

ब्रज की होली का स्वरूप

डॉ0 (श्रीमती) राजकुमारी पाठक

होली का रंगमच पर्व प्रतिवर्ष भारतवर्ष तथा अन्य कई देशो में मनाया जाता है परस्पर आनन्द, उल्लास, उत्साह, उन्माद और रागानुराग का पर्व; रंग संग उमंग, तरंग, भंग, हुड़दंग, मृदंग, चंग और अनंग का उन्मत्तकारी पर्व है होली. हॅसी-ठिठोली प्रेम की बोली, रंगोली, मस्ती भरी टोली तथा रसिक हमजोली से भरी होली का विश्व व्यापी रूप विश्व बन्धुत्व की भावना को साकार करता है. हॅसना-हॅसाना, गाना-बजाना, गीतों के माध्यम से गाली सुनाना और मानवों को बहुरूपिया बनाना, गिले-शिकवे भुलाकर सबको गले लगाना एक दिव्य परिवेश की सृष्टि करता है.

होली का अपना इतिहास है. होली है-असत्य पर सत्य की जीत, अधर्म पर धर्म की जीत, कलुषता पर पावनता की जीत, तामसिक आसुरी प्रवृत्तियों पर सात्विक प्रवृत्तियों की जीत तथा नास्तिकता पर आस्तिकता की जीत. रात को होली जलायी जाती हैं जो कि मृत संवत्सर का प्रतीक है-जाते हुए संवत्सर का प्रतीक, इसीलिए नवोढ़ा को जलती हुई होली देखने से रोका जाता है. ऋगवेद में वर्णित है कि नवान्न की बालियों को आग में भूनने से ही होली का पर्व अस्तित्व में आया. वेदों का मुख्य अन्न जौ (यव) है अतः फाल्गुन पूर्णिमा को जौ की बालियों का ही प्रयोग होता था. इस काल तक खेत, गेहूँ, जौ की बालियों से लहलहा उठते थे. होलिका रुपी यज्ञ में नवान्न की बालियों को भून कर समर्पित करने से सभी को हार्दिक प्रसन्नता होती है. यही परम्परा आदि काल से चली आ रही है. होली जलाने के बाद रात्रि में गायन, वादन तथा नृत्य का भी विधान है-

"गीत वाद्यौस्तया नृत्यैः रात्रि सा नीयते जनैः।"

"व्रज चौरासी कोस में चार गॉव नित धाम।
वृन्दावन अरू मधुपुरी बरसानों नन्द गाम।।"

ब्रज मण्डल की होली अपने विशेष भक्तिपूर्ण स्वरूप के लिए प्रसिद्ध है.

यहॉ रंगों के साथ-साथ लड्डुओं और लाठियों से भी होली खेली जाती है. लाठी-डण्डों के मधुर प्रहार के साथ ही पुरूषो को महिलाओं के प्रेम-सने पोतनों (कोड़ो) का आनन्द भी लेना पड़ता है जिससे होली का उत्साह-उन्माद दूना हो जाता है. यहॉ की होली के लिए कहा जाता है-'देखि-देखि मा ब्रज की होरी, ब्रहमा मन ललचाए'। ब्रज की होली भगवान श्रीकृष्ण पर केन्द्रित है. यह कहावत भी चिर-प्रचलित है कि 'सब जग मे होरी, ब्रज में होरा' होली मनाने के माध्यम से प्रहलाद की भक्ति और कृष्ण की रस रंग लीला को याद किया जाता है. किंवदन्ती है कि एक बार कृष्ण ने अपनी मैया से पूछा कि मैं काला हूँ और राधा गोरी है ऐसा क्यों? तब यशोदा मैया ने कहा कि राधा के मुख पर काला रंग लगा दो तब उसका रंग भी तुम्हारी तरह काला हो जाएगा. सम्भवतः तभी से होली पर मुख को विशेषतया काला करने की परम्परा शुरू हो गयी. सबसे अधिक मज़ेदार बरसाना की लट्ठमार होली होती है. यह गॉव मथुरा से लगभग ४२ किलोमीटर दूर है. राधा बरसाने की थी और कृष्ण नन्दगॉव के. प्रतिवर्ष नन्दगॉव के लोग बरसाना में होली खेलने आते है. इसकी प्रसिद्धी इतनी है कि देश देशान्तर से लोग यहॉ की होली देखने आते है.

सम्पूर्ण ब्रज में बसन्त पंचमी से ही होली का यह ४० दिवसीय महोत्सव प्रारम्भ हो जाता है. फागुन सदी अष्टमी को बरसाना से राधारानी की तरफ से उनकी सखियॉ कन्हैया को उनके सखाओं की टोली सहित होली का निमन्त्रण देने नन्द भवन आती है और गुलाल की मटकी लेकर नृत्य-गीत द्वारा ठाकुर जी को बरसाने के लिए बुलाती है-'होली खेले तो आ जाइयों बरसाने रसिया'। रात्रि में नन्द भवन में गोस्वामी समाज द्वारा पद-गायन के समय इस आमंत्रण का गुलाल प्रत्येक नन्दगॉव वासी को लगाया जाता हैं और फिर सभी ग्वाल आनन्द से भर कर गा उठते है-

"कान्हा नोइयों बुलाय गयी नथवारी
वा नथवारी को गाम न जानूँ
बरसानों गॉव बताय गयी प्यारी।"

निमंत्रण मिलने के पश्चात् अगली नवमी को प्रातः नौ बजे नन्द भवन में यहॉ के सभी गोस्वामी समाज के 'हुरियारे' अपनी सजी धजी ढालों के साथ एकत्र होते है. ठाकुर जी के प्रतीक स्वरुप ध्वजा को लेकर नन्दीश्वर महादेव व श्री नन्दबाबा यशोदा को सामने नाचते गाते हुए उनसे होली खेलने के लिए 'बरसाना' जाने की अनुमति लेते है. वे गाते हैं-"बरसाने चलो खेलें होरी। पर्वत पे वृषभान महल हैं, जहॉ बसे राधा गोरी।" बरसाना में राधा रानी जी के मन्दिर में पहुँच कर दोनेां पक्षों के लोगों का संयुक्त गायन होता है. फिर रंगीली गली में नन्द गॉव

के हुरियारें बरसाना की हुरियारिनों से नोक-झोंक व हास-परिहास करते हैं जिसके विरोध में वे पुरूषों पर दनादन लाठियों की वर्षा करती है जिन्हें पुरूष अपनी ढालों से रोकते हैं. ऐसी लट्ठमार होली को देखने के लिए देवता और ब्रहमा भी तरसते है. नन्दगॉव के लोगों और लाड़ली जी के मन्दिर के गुंसाइयों की पत्नियों के बीच यह एक नाटकीय लड़ाई होती है. महिलाएँ अपने-अपने मुँह पर घूँघट डाले हुए लम्बी लम्बी बॉस की लाठियों से लैस रहती है जिनसे वे अपने प्रतिद्वन्दी पुरूषों के सिर, कन्धों और पीठ पर तेज और धमाकेदार प्रहार करती हैं जिन्हें पुरूष चमड़े की गोल ढालों और बारहसिंहा के सीगों द्वारा बचा कर आत्मरक्षा करते है.

फालैन की होली भी कम आकर्षक नहीं. यहॉ प्रहलाद कुण्ड नामक एक पवित्र सरोवर हैं. स्थानीय पंडित फालैन की नितपति 'फाड़ना' से करते हैं जो प्रहलाद के दुष्ट पिता के अन्त से सम्बन्धित हैं. कुछ लोग इसे 'प्रहलाद ग्राम' का विकृत रूप मानते हैं. कोसीकलां से ७ किलोमीटर दूर फालैन में विश्व प्रसिद्ध 'पण्डा मेले' में पण्डा के चमत्कार को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं. मन्दिर में विखरते रंगों के मध्य समाज गायन की अनुगूँज मन को रंग रही थी. पड़ोसी गॉव गुहेता, विशम्भरा, महरौली, राजागढ़ी तथा सुपाना आदि से औरतें समाज गायन करती हुई विशाल होलिका की पूजा करती है. नवयुवा रसिया, होली, धमार आदि की मस्ती में नाच-कूद करते है. कुछ लोग नौटंकी, स्वांग का भी रास रचते है. यहँ पर धधकती आग में सें पण्डा निकलने की परम्परा बनी हुई है. होली से एक दिन पहले मन्दिर में ज्योति रखी जाती है. रात्रि में होली खेली जाती हैं पश्चात पण्डा दूध की धार के साथ गॉव की परिक्रमा करता है. पण्डा जोत पर हाथ रखकर उसके ठण्डे होने की प्रतीक्षा करता है फिर होलिका में प्रवेश करता है. इसके बाद वह प्रहलाद कुण्ड में स्नान करके दहकते अंगारों से निकलता है फिर मन्दिर का महन्त उसे कम्बल ओढ़ाकर मन्दिर में दशनार्थ ले जाता है और फिर पण्डा सभी श्रद्धालुओं का अभिवादन स्वीकार करता है. यह पण्डा करीब एक माह तक तपस्या में लीन रहकर सभी की ऑखों के सामने धधकती आग से निकलने का साहसिक कार्य करता है.

कोसीकला के समीपवर्ती गॉव 'कठैन' के सुप्रसिद्ध हुरंगे में हुरियारों का अरहर की झागों से स्वागत होता है. राधारानी की जयजयकार के बीच बेर व सन्तरें फेंके जाते हैं जिन्हें श्रद्धालु प्रसाद रूप मे लूटते है.

पौराणिक मान्यता के अनुसार जांव को राधारानी का जन्म स्थल माना जाता हैं और बठैन दाऊजी महाराज व श्रीकृष्ण की बैठक मानी जाती है जो कालान्तर में अपभ्रंश होकर बड़ी बठैन व छौटी बठैन के नाम से प्रसिद्ध हुई. बठैन में तो चरण पहाड़ी नाम से एक स्थान हैं जहॉ आज भी भगवान श्रीकृष्ण के पैर बने है. बठैन का हुरंगा भी मनोरंजक है. यहॉ के हुरियारों हुरियारिनों को 'फगुआ देते है जिसमें सुहाग सिंदूर, बिन्दी, चुटीला, महावर व वस्त्रादि शामिल हैं. ढोल एवं नगाड़ों की धाप पर गाया जाता है-"चलौ अइयौं रे श्याम मेरी पलकन पे, लाला तोय बुला गयी नथवारी" इस प्रकार लोक गीतों पर आधारित नृत्य के साथ कांसे की थाली, झॉझ, मंजीरा, चिमटा आदि के वाद्ययंत्रों की संगत की जाती है.

दाऊजी महाराज के मन्दिर में होली समाज गायन की अनूठी परम्परा है. बसन्त पंचमी से आरम्भ होने वाला समाज गायन डोल पंचमी तक चलता है. ४५ दिवसों तक चलने वाले समाज गायन के पद अष्टछाप कवियें द्वारा रचित है. होलिकाष्टक के साथ ही समाज गायकी में नक्कारा और जुड़ जाता है. यह गायन शैली ब्रजमंडल की अपनी प्राचीन धरोहर का एक जीवन्त प्रमाण है. हुरंगा से पूर्व (२ दिन पूर्व) मन्दिर प्रांगण में बने हौदों में रंग सामग्री (टेसू व पलाश पुष्प) भिगोयी जाती हैं जिससे रंग तैयार होता है.होली के दिन मंदिर का ऑगन केसरिया रंग में डूब जाता है. पुरूषों के कपड़ें फाड़कर उनके बदन पर महिलाएँ कोड़े मारती है और हुरंगे की धूम मचाती है. मथुरा का प्रसिद्ध द्वारकाधीश मन्दिर भी होली की रंगत से देशी-विदेशी श्रद्धालुओं के सर्वाधिक आकर्षक का केन्द्र बना हुआ है. चतुर्वेद समाज द्वारा गायन वादन की सशक्त परम्परा का निर्वाह अत्यन्त सफलता पूर्वक होता है मन्दिर के पट खुलते ही भक्तजन अबीर-गुलाल की वर्षा कर देते है. यह दौर कई-कई घण्टों तक चलता है.

सारांशतः ब्रज की होली मे प्रेम है, रस है, उमंग है, उत्साह जोश मस्ती की रंगमयी धारा को प्रवाहित करने वाला होली का यह त्योहार जीवन को स्वीकारने की प्रेरणा देता है.

१६५, मानस नगर, मथुरा

रंगोली

आ गयी होली,
लेकर संदेश
प्यार का पैगाम
देश ....परदेश।
देखें न नजरें
अब कोई फसाद।
घर-घर उल्लास
मिटे अवसाद।
रंगो की बहार
हंसी की ठिठौली।
असत की धरा पर
सत की रंगोली।

इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़

मुक्तक

होली हैं होली हैं.... फैली मनुहार
अबीर और गुलाल कौ लगौ अम्बार
नैनन की पिचकारी मांहि भर अनुराग
ठौर-ठौर पड़न लागी, प्यार की फुहार।
++++++++++++++++++++
नित्य दिवाली होली किसके घर मनती है
गली-गली की कीचड़ कमल नहीं जनती है
हार गया अंग-अंग लड़ने झगड़ने में
बात जब भी बनती हैं प्रेम से ही बनती हैं।
++++++++++++++++++++
प्यार तो बस प्यार है, किसी से भी हो जाये
दिल का एतबार क्या, किसी पर भी आ जाये।
इश्क पर टिका यहॉ, इस जहॉ का वजूद है
गले लगाये सबको जो, वहीं खुदा बन जाये।
++++++++++++++++++++
पद पैसे के लिए कहॉ तक दौड़ोगें?
सच्चे पथ से कब तक मुँह को मोड़ोगें?
चाहे नहीं चुकेगी तुम चुक जाओगे
होगें खाली हाथ जब जग छोड़ोगें।

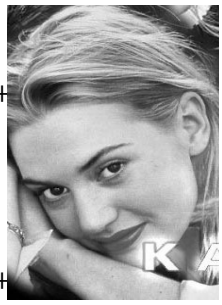

++++++++++++++++++++
जीत-जीत कर हार गये
तट से चल मंझधार गये
जो शोर मचाते तट पर
ना डूबे ना पार गये।
++++++++++++++++++++
ग़म से डाले हैं, फेरे दिलवर की तरह
खुशियॉ छूटी हैं, हमसे पीहर की तरह
देखा परखा सभी ने, अपनी अपनी नजर
बजते रहते हैं हम महुअर की तरह।

डॉ० इन्दिरा अग्रवाल, अलीगढ़

फागुन की बहार होली में

दिल होने लगा तेरे लिए बेकरार होली में।
गुज़र न जाए फागुन की बहार होली में।।
मुझसे निगाहें मत फेरों, आ जाओं पास मेरे।
और कितना करूँ मैं तेरा इंतजार होली में।।
तुम अपने हाथों से मुख में मेरे गुलाल मलो।
करों न इस बार मुझे बेकरार होली में।।
नई उंमगे नई आरजूऐं, नयी हसरतें लेकर।
कुछ तुम करों, कुछ हम करें, इजहार होली में।
इक तरफ जुआ तो इक तरफ दंगो का शोर।
इक तरफ मिल रहे गले, कुछ यार होली मे।।
इधर किस कदर आतिशे-तपिश की शिद्दत।
उधर जल रहा हैं दिल, 'सुहैल' दागदार होली मे।

गोरी हम पे न रंग तू डार।

गोरी पे न रंग तू डार।
देखों पिया खड़े हैं उस पार।।
लो फिर अंगना आ गयी होली।
फिर से भिगा दे उनकी चोली।
ले आज तू अपना कर्ज उतार।।
देखो पिया.....
बालों में भर दे उनके गुलाल।
लाल फिर कर दे उनके गाल।।

आज पूरी होगी, मन की पुकार।।
देखो पिया.....
रंग विरंगे रंग लेकर जइयो।
सखा सहेली संग लेकर जईयों।
तू करके अब सौलह सिंगार।।
देखो पिया.....

डॉ0 नौशाब सुहैल दतियावी, दतिया, म.प्र.

नव संवत् सर हो मंगलमय

मन को हरती रहे विखती,
अधरों पर मुस्कान अक्षय।
नव संवत् सर हो मंगलमय।।
शीस, केश के मध्य, रहें,
दिल हरता सिन्दूर अनय।
कन-खन कंकन की खनक,
व्यापे मंडल वाड्मय।।
होनी-अनहोनी बाधाओं से
पाये ममीर विजय।
भाल विन्दु की रजत चमक,
दिन दूनी बढ़े अथय।।
छागल की छम-छम छमक में,
सामाई 'भानु' विनय।
नव संवत् सर हो मंगलमय।।

भानु प्रताप सिंह 'क्षत्रिय', चकपैगम्बरपुर, सिधॉव, फतेहपुर,

आध्यात्म

मानस की बहुप्रयोजनीयता

✍कैलाश त्रिपाठी

किसी ग्रंथ की उपादेयता उसकी प्रयोजनीयता पर आधारित हैं. ग्रंथ अपनी प्रयोजनीयता से ही सीमित या व्यापक होता हैं. रामचरित माानस आज समाज में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कषतिक चेतना के ऊर्जा केन्द्र के रूप में स्थापित हैं क्योंकि उसमें मानवीय जीवन से संबंधित विभिन्न तत्वों को सुन्दर संयोजन या समावेष हैं. जिसने इसे बहुप्रयोजनीय रूप में लाकर व्यापकता प्रदान की हैं. यहॉ मानस की बहुप्रयोजनीयता पर तान्त्विक विमर्षयुक्त एक विहंगम दर्षश्ट अपेक्षित हैं.

मनुष्य ने जब विभिन्न प्रकार की ध्वनि तरंगों और उनका जीवन पर प्रभाव जाना तथा वह अक्षर और शब्द के अविनाशी तत्व एवं उसकी व्यापकता से परिचित हुआ तब उसने विभिन्न वर्णो के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तरंगों के पृथक-पृथक प्रभावों के आधार पर अक्षरों का संयोजन कर मंत्रों का सृजन किया. प्रारंभिक स्तर पर मंत्रों के शब्दों का संयोजन विभिन्न वर्णो के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि तंरगों के आधार पर किया गया. अतः उन शब्दों और शब्द समुच्चयों का अर्थ रहित होना स्वाभाविक था. इस प्रकार ध्वनि तंरगो के प्रभाव पर आध ारित गढ़े गयें शब्दों से सृजित मंत्र अर्थहीन तो रहे परन्तु उनका वांछित प्रभाव देखा गया. अर्थात जिन प्रयोजनों से वे सृजित किये गये उन प्रयोजनों की सिद्ध उनसे हुई. इन मंत्रों को साबर मंत्र कहा गया. शास्त्रों में इन्हें भगवान शंकर द्वारा सृजित या उनके डमरू से निकला बताया गया. 'शिव' शब्द कल्याण का पर्याय हैं. प्राणि मात्र के कल्याण के प्रति समर्पित ऋषि कल्याण रुप अर्थात् शिव स्वरूप अर्थात शिव स्वरूप ही हैं. मानस में गोस्वामी जी ने तत्संबंधी संकेत इस प्रकार किया है-

कलि विलोकि जग हित हर गिरजा।
साबर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा।
अनमिल आखर अरथ न जायू। प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू। बा.का.१५/३

कालान्तर में मनीषियों ने प्रयास किया कि क्यों न इन शब्दों को इस प्रकार गढ़ा जाय कि वे ध्वनि तंरगो के प्रभाव से निहित प्रयोजन की तो सिद्ध करें ही उनका सम्यक अर्थ भी हो. उनमें निहित हो चिन्तन, दर्षन या किसी देवता विशेष की प्रार्थना. अर्थात स्वर्ण में सुवास. अभिप्राय यह कि मंत्र रूपी उन विशिष्ट वाक्यों या शब्द समुच्चयों से एक साथ दो या दो से अधिक प्रयोजनों की सिद्धि. ये हैं वैदिक मंत्र जैसे -गायंत्री या महामृत्युंजय आदि. पुनः अगले स्तर पर मनीषियों ने मंत्रों को और अधिक उपादायी बनाने हेतू उनमें गेयता का समावेश करके उनके अर्थो का ऐसा सयोंजन किया कि उनसे देव विग्रहों का शोडषोपचार पूजन भी हो सके और उनकी स्तुति भी. अर्थात् स्तोत्र के रूप में मंत्रों का संकलन. यथा-श्रीसूक्त एवं पुरूष सूक्त आदि. इनमें मंत्र शक्ति के साथ अन्य तत्वों का भी सम्यक समावेश हैं. अर्थात एक रचना से कई प्रयोजनों की सिद्धि. विभिन्न प्रयोजन मूलक होने पर भी यह वैदिक मंत्र जन सामान्य की वरिधि में नहीं आ पायें क्योंकि वे लोक भाषा में नहीं थें.

इसी प्रकार वेद-उपनिषदादि जन सामान्य की पहुॅच से बाहर वर्ग विशेष में ही सीमित रहें क्योंकि इनका प्रयोजन था आध्यात्मिक दर्शन का प्रस्तुतीकरण. अतः इनकी उपादेयता वर्ग विशेष के लिए ही थी. बाद में मनीषियों ने सोचा कि ग्रंथों को बहुउपयोगी बनाने हेतु उनका प्रणयन इस प्रकार किया जाए कि वे सभी के लिए रूचिकर और उपादायी हों. उनमें समाहित हो इतिहास, भूगोल, खगोल के साथ दर्शन तथा मानवीय जीवन से संबंधित अन्य विभिन्न तत्व भी. आध यात्मिक चेतना, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीय चेतना का सम्यक समावेश. इसके लिए उसमें कर्म योग, भक्ति योग, ज्ञान योग, सांख्य योग आदि आध्यात्मिक विषयों के साथ लौकिक उत्कर्ष, सामाजिक लोक रीति-नीति आदि को संयोजित किया जाए. यहीं नहीं वे काव्य, नाटक, संगीत, उद्बोधन आदि गुणों से भी युक्त हों. जिससे वे व्यापक हो सकें. जो जिस प्रयोजन से उन्हें पढ़ें उसके उस प्रयोजन विशेष की उनसे सिद्धि हों. यहीं नहीं यदि सामान्य जन उन्हें केवल मनोरंजन की दृष्टि से पढ़े तो उसका मनोरंजन भी हों. पुराण और उपपुराण इसी प्रकार के ग्रंथ हैं.

मानसकार ने भी 'मानस' को व्यापकता प्रदान करते तथा जन सामान्य से लेकर समाज के विभिन्न वर्गो के लिए समान रूप से उपादायी बनाने हेतु उसमें बहुपक्षीय मानवीय जीवन से संबंधित विभिन्न तत्वों का समावेश किया हैं. इसमें साध ान, चतुष्टय नाम, रूप, लीलाधाम के साथ भक्ति तत्व, ज्ञान तत्व, कर्म तत्व, ध्यान सांख्य, दर्षन विशयक आध्यात्मिक चेतना तथा इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, शकुन, व्यवहारिक लोक रीति-नीति सहित लौकिक उत्कर्ष और अपकर्ष के कारकों का सुंदर सामंजस्य हैं. स्वानुभूतियों की दृढता हैं. साथ ही इसे काव्य, नाट्य, संगीत या गेयता आदि के संयोग से जन सामान्य कि सीमाओं मे लाया गया हैं. यहीं नहीं मानस को सर्वसाधारण के समीप में लाने हेतु तुलसी ने इसकी रचना लोकभाशा में की. वे यह स्पष्ट रूप से समझते थे कि यदि वे इसकी रचना देवभाषा संस्कृत में की जाएगी तो इसकी बहुप्रयोजनीयता समाप्त हो जाएगी और ग्रंथ वर्ग विशेष में सीमित हो जायेगा. यहॉ तक कि उन्होंने मनोरंजन

की मानवीयवृत्ति को दृष्टिगत करते हुए 'मानस' में हास्य एवं मनोविनोद को भी पर्याप्त स्थान दिया हैं. तत्संबंध में वे बुध ा विश्राम सकल जन रंजन से इसकी बहुप्रयोजनीयता की ओर संकेत करते प्रतीत होते हैं. वे जानते थे कि मनोरंजन, लौकिक उत्कर्ष, सामाजिक चेतना, कामना पूर्ति आदि के प्रयोजन से ग्रंथ के संपर्क में आने वाला भी कभी न कभी उसके दार्शनिक तत्व (आध्यात्मिक चेतना) तक भी पहुँच सकता हैं. यदि ग्रंथ में केवल दर्शन होगा तो लोग जो सासांरिक सुखको ही सुख मान रहे हैं, जिनकी दर्शन या आध्यात्मिक चेतना के प्रति रूचि नहीं हैं,वे ग्रंथ के संपर्क में आयेगें ही नहीं. पहली आवश्यकता यह है कि किसी न किसी निमित्त सर्वसाधारण को ग्रंथ के संपर्क में लाया जाए. इसके लिए आवश्यक है ग्रंथ का बहुपक्षीय होना. अर्थात उसकी बहु प्रयोजनीयता. तुलसी की यह अवधारणा सही थी. वे मनोरंजन, लौकिक उत्कर्श, कामना पूर्ति, रीति-नीति आदि के माध्यम से जन सामान्य को आध यात्मिक चेतना तक पहुँचाने में सफल हुए. बेल्जियम के फादर कामिल बुल्के तथा रूस के ए.पी. वरान्निकोव आदि विदेशी विद्वान साहित्यिक अध्ययन या अपनी भाषा अंग्रेजी या रूसी में अनुवाद के प्रयोजन से 'मानस' के संपर्क में आये और बाद में वे उसकी आध्यात्मिक चेतना तक पहुँचें. विषयी जीव को आध यात्मिक चेतना तक ले जाना सहज नही हैं. मनीषियों ने मनुष्यों की समाज वृत्ति, लोभ वृत्ति, मनोरंजन वृत्ति आदि के माध्यम से जनसामान्य को आध यात्मिक चेतना तक पहुँचाने में सफलता पाई हैं. नव सृजित साहित्य बहु प्रयोजनीय न होने के कारण वर्ग विशेष में सीमित होता गया. अधिकांश पुस्तके किसी एक प्रयोजन विशेष की पूर्ति में सहायक हैं. उन्हें केवल वही पढ़ेगा जिसके प्रयोजन की उससे पूर्ति होगी. मनोरंजन की दृष्टि से व्यक्ति हास्य व्यंग्य या चुटकुलों की पुस्तक पढ़ेगा न कि दार्शनिक ग्रंथ. धीरे-धीरे साहित्य में बहुप्रयोजनीय ग्रंथों का अभाव होता गया. जिससे साहित्य के प्रति समाज की उदासीनता बढ़ती गयी. मानस की बहुप्रयोजनीयता का एक अन्य संकेत दृष्टव्य हैं. श्रीराम राज्याभिषेक की फलश्रुति में गोस्वामी जी लिखते हैं कि

महाराज कर सुभ अभिषेका। सुनत लहहिं नर बिरति बिवेका।।
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहें। सुख संपति नाना विधि पावहिं।।

अर्थ स्पष्ट हैं कि -राम राज्याभिषेक के इस चरित को जो सुनेगा या गायेगा उसे विरति और विवेक की प्राप्ति होगी. पुनः आगे लिख दिया कि इसी चरित को यदि सकाम व्यक्ति सुनेगा या गायेगा तो वह नाना विधि सुख सम्पत्ति प्राप्त करेगा. उसी चरित्र को पढ़ने, सुनने या गाने का फल विरति और विवेक और उसी चरित का फल नाना विधि सुख और सम्पत्ति। अर्थात उसी से योग और उसी से भोग. एक ही चरित में योग और भोग दोनो के दर्शनों का सम्यक समावेश. यह पाठक या श्रोता पर निर्भर है कि वह योग चाहता है या भोग. कैसे हो सकते हैं एक ही वस्तु के दो अलग-अलग विपरीत फल? इस शंका के कारण 'मानस' की यह फल श्रुति मिथ्या प्रतीत होती हैं. यद्यपि मिथ्या नही हैं. आज सम्यक विचार के बिना ग्रंथों में उल्लिखित इस प्रकार की फल श्रुतियों को लोग मिथ्या मानने लगे हैं. पहली षंका यह है कि कोई काव्य या काव्यांश योग या भोग कैसे दे सकता हैं? इस शंका का मूल कारण यह है कि प्रायः लोग यह जानते ही नहीं है कि साहित्य मनुष्य के अन्तःकरण को किस प्रकार और किस सीमा तक प्रभावित करता हैं? साहित्य का मनोवृत्तियों से तथा मनोवृत्तियों का कर्म एवं कर्मफल से क्या संबंध है? प्रार्थना शक्ति, शब्द की ध्वनि शक्ति कितनी हैं तथा वह किस प्रकार व्यष्टि और समष्टि को प्रभावित करती हैं? यदि हमें साहित्य में समाहित इन विभिन्न शक्तियों की ठीक-ठीक जानकारी हो सके तो इन फलश्रुतियों पर उठती शंकायें स्वतः समाप्त हो जायें.

कोई साहित्यिक ग्रंथ बहुप्रयोजनीय भी हो सकता हैं क्योंकि साहित्य में विज्ञान, ज्योतिश, सैन्य विज्ञान, खगोल षास्त्र आदि को तथा ऐतिहासिक सन्दर्भ में लौकिक चरितों के माध्यम से विभिन्न जीवन दर्षनों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की अद्‌भुत क्षमता हैं. पुराण साहित्य बहुप्रयोजनीय हैं. इसमें साहित्य की शक्तियों का यथाउचित प्रयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के कारको और तत्वों को सूक्ष्मता से समाहित किया गया हैं. जिनसे उनका अपेक्षित प्रभाव समाज पर होता हैं. पुराण साहित्य के सदृष्य रामचरित मानस में भी बहुप्रयोजनीयता हैं. श्रीरामराज्याभिषेक को हम एक ऐतिहासिक चरित भी मान सकते हैं और श्रीराम को अवतार मानकर लोकोन्तर दिव्य चरित्र भी. यह श्रोता या पाठक के व्यक्तिगत विवेक और मान्यता पर निर्भर है कि वह उसे किस रूप में देखता है। इसके आगे के बिन्दु पर विचार करने से स्पश्ट होता है कि नाट्य, संगीत आदि तत्वों के संयोग से काव्य में वर्णित मानस के रामराज्याभिषेक चरित में योग और भोग दोनों के कारकों को समाहित किया गया हैं. अर्थात उसमें विरति और विवेक उत्पन्न करने वाले तथा सुख सम्पत्ति प्रदान करने वाले दोनों प्रकार के कारकों का समावेश हैं. यह व्यक्ति विशेष की रूचि और अन्तःकरण की स्थिति आदि पर निर्भर है कि सन्दर्भित चरित्र को पढ़ते या सुनते समय उसका ध्यान किन कारकों पर जाता हैं तथा वह उन कारकों को अपने जीवन में कितना आत्मसात करता हैं. शेष पृष्ठ पर....

साहित्य मेला-०६ एक नजर

साहित्य मेला:०६ सम्पन्न

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद एवं राष्ट्रीय हिंदी मासिक विश्व स्नेह समाज' के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय साहित्य मेला १८ दिसम्बर, रविवार को नागरी प्रचारिणी सभा में द्विसत्रीय देवरिया महोत्सव का आयेजन विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान व राष्ट्रीय हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' के सयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया.

साहित्य मेले के पहले दिन अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी बी.एल. शर्मा ने किया जिसमें पॉच सौ से अधिक पत्र-पत्रिकाएं व पुस्तकें शामिल की गई. प्रदर्शनी लोगों के द्वारा काफी सराही गयी.

पुस्तक प्रदर्शनी उद्घाटन के बाद 'साहित्यिक पत्रकारिता' के विविध आयाम' विषयक संगोष्ठी का आयोजन झॉसी से पधारे वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. ओमप्रकाश बरसैया की अध्यक्षता में हुई. जिसमें मुख्य अतिथि पूर्व जज दिनेश चन्द्र दूबे रहे. वक्ताओं में कर्मनिष्ठा के संपादक डॉ० मोहन आनंद तिवारी, सुपर इंण्डिया के संपादक डॉ० वृंदावन त्रिपाठी 'रत्नेश', डॉ० शिवेन्द्र त्रिपाठी, श्री निवास चतुर्वदी, मुन्ने बाबू दीक्षित शशांक, डॉ. प्रमोद सक्सेना, हरिचरण वारिज, अंगमाधुरी के संपादक रामगणेश पाण्डेय, समाज सेवी सुशील कुमार पाण्डेय, गोपाल कृष्ण यादव आदि मुख्य रूप से थें. गोष्ठी संचालन डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया और अतिथियों का स्वागत कार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया.

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की सफलता का राज इस बात से लगाया जा सकता है कि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय माघमेला का पंडाल की सारी कुर्सियां खचाखच भरी हुई थी, पंडाल के बाहर से लोग चारो तरफ घेरे खड़े हो कवि सम्मेलन का आनंद ले रहे थे. सायंकाल ६ बजे शुरू हुआ यह कवि सम्मेलन ठंड के बीच रात १ बजे तक चला. चॉद अपनी चॉदनी को विराम दे रहा था और बिजली के बल्व चॉद की कमी को दूर करने का पूरा प्रयास कर रहे थे. शांत माहौल में श्रोताओं की तालियों की गड़गड़ाहट अनायास ही तम्बुओं के शहर में चिर निद्रा में सोये कल्पवासियों को उठाकर कार्यक्रम स्थल की ओर जाने को मजबूर कर रहे थे. कार्यक्रम में श्रोताओं ने भरपूर आंनद उठाया और जाते समय श्रोताओं की जुबॉन से 'वाह मजा आ गया' शब्द निकल रहे थे. कार्यक्रम का शुभारम्भ एक युवा कवि अशोक कुमार गुप्ता द्वारा सरस्वती वंदना से हुआ.

भिण्ड, मध्य प्रदेश से पधारे रमेश कटारिया 'पारस' ने-

अंध विश्वासों के सहारे पल रहे हैं हम।
अंधे कुंए में अंधे बनकर चल रहे हैं हम।

से कार्यक्रम का समा बांधा तो इलाहाबाद के वरिष्ठ कवि एवं ठेगें पर सब मार दिया के संपादक डॉ० रामसेवक शुक्ल ने-**अब प्यार की कुछ पंक्तियां**
रचकर के देख लें,
सद्भाव की अभिव्यक्तियां,
गढ़कर के देख लें

से कार्यक्रम को आगे बढ़ाया. भोपाल से पधारे कर्मनिष्ठा के सम्पादक एवं सुप्रसिद्ध कवि डॉ० मोहन आनन्द तिवारी ने- **हिंदी माथे की बिन्दी है,**
उर्दू दिल का प्यार।
आओ साथ करें हम,
सब मिल भाषा का श्रृंगार.

से कार्यक्रम को एक नयी ऊँचाई प्रदान की. प्रतापगढ़ से पधारे वरिष्ठ कवि डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' ने अपने रचना से आज के नेताओं की हाले बयॉ को व्यक्त किया।

हवा धूप पानी पर कब्जा है इनका,
धन और सत्ता से रिश्ता है इनका।
न रोटी की चिन्ता न मेहनत से मतलब
सियासत ही बस एक धन्धा है इनका।।

सुनकार वाहवाही लूटी.

ग्वालियर से पधारे दिनेश चन्द्र दूबे ने-**तुम्हें बॉधने इक कागज पर,**
आ कोई गीत लिखें,
समय पार, जब उम्र खड़ी हो,
जीवन चित्र दिखें।

काफी सराही गयी। भोपाल से पधारे व्यंगकार एवं गीतकार हरिचरण वारिज ने- **मैं गांधी का चौथा बंदर,**
आंख में शोले हाथ में खन्जर।।

सुनाकर श्रोताओं को गुदगुदाया। रायसेन, मध्य प्रदेश से पधारे कवि बी.पी.कोष्ठी 'सरगम' ने-

आदमी के हाथों से निकल गया आदमी।
चमड़े के सिक्के सा चल गया आदमी।।

से श्रोताओं की खूब ताली बटोरी।

नई दिल्ली से पधारी कवियत्री व कार्यक्रम

की मुख्य अतिथि श्रीमती हेमा उनियाल ने- **मजदूर जो दिन भर,**
तोड़ता है पत्थर,
बेचता है पसीना,
खाता है धूल और मिट्टी
सुनाकर एक मजदूर की व्यथा कथा को सुनाकर वाह वाही लुटी।
प्रतापगढ़ से पधारे वरिष्ठ कवि पं० शिवेन्द्र त्रिपाठी ने-
उठो कलम के ऐ रणवीरों,
गूंज रहा तूफान है।
लोकतंत्र की चिता जल रही,
रोता हिन्दुस्तान है।।
से वाहवाही लूटी।
झांसी से पधारे डॉ० ओमप्रकाश बरसैया 'ऊँकार' ने-
जल में रह गजराज को, खींच लेय घड़ियाल,
पर जल बाहर श्वान पै, गले न उसकी दाल।
से वाहवाही लूटी। कार्यक्रम में इलाहाबाद के विनय बागी ने अपनी ओजस्वी कविता- **हमने जिनको सत्ता सौंपी, निकले लाबरदारों में,**
संसद पर कब्जा कर डाला चम्बल के सरदारों ने।
सुनाकर वाहवाही लूटी। पीलीभीत से पधारे मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक' ने-
आओ हम जीवन के, अभिनव मधु गीत लिखें।और नहीं कुछ तो हम, मन की ही प्रीत लिखें।
अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में भोपाल से पधारे वरिष्ठ कवि डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना ने
सत्य थाम कर जो चला झूठा दिया उछाल
शरणागत उसके हुए दिग दिगन्त दिक्‌पाल।।
से कार्यक्रम को विराम दिया। इसके अलावा इटावा से पधारे महेन्द्र सिंह, बहराइच के ईश्वर शरण शुक्ल, बरेली के श्रीनिवास चतुर्वेदी, चित्रकूट से श्री रामगणेश पाण्डेय, इलाहाबाद के जगदम्बा प्रसाद शुक्ल, कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी 'चिरकूट इलाहाबादी', वीरेन्द्र सिंह कुसुमाकर, सूर्यनारायण शूर सहित तमाम कवियों की रचनाएं भी सराही गयी। कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि नई दिल्ली की श्रीमती हेमा उनियाल थीं व अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ०प्रमोद प्रकाश सक्सेना, भोपाल ने किया. विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' संपादक, सुपर इण्डिया, प्रतापगढ़ थे. कार्यक्रम के अंत मेंकार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अतिथियो के प्रति आभार प्रकट किया.

मानवाधिकार संरक्षण में मीडिया की भूमिका

कार्यक्रम के दूसरे दिन ५ फरवरी को 'मानवाधिकार संरक्षण में मीडिया की भूमिका' विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के सहयोग से किया गया. इस अवसर पर मुख्यअतिथि नवभारत दैनिक सतना के सम्पादक श्री संजय पयासी थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रियंका पाक्षिक लखनऊ के संपादक श्री रामप्रकाश वर्मा कर रहे थे. अपने उद्‌बोधन में मुख्य अतिथि ने कहा- आम आदमी के अधिकार के लिए व्यवस्था परिवर्तन में मीडिया सकारात्मक भूमिका निभा सकता है, इसके लिए उसे पारदर्शी होना बहुत आवश्यक है. इसी पारदर्शिता गुण के कारण ही आजादी की लड़ाई में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हैं. आज मानवाधिकारों के हनन रोकने में संविधान की विभिन्न धाराओं में भी परिवर्तन आवश्यक हो गया हैं. मानवाधिकार का लाभ आम आदमी को मिले इसी के साथ ही साथ सूचना के अधिकार पर भी मीडिया जागरूक रहें तभी वह समाजोपयोगी बना रहेगा.'
अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री रामप्रकाश वरमा ने कहा-'हमें मानवाधिकारों की चिन्ता से पहले पत्रकारों के अस्तित्व सम्मान और सुरक्षा की भी चिन्ता करनी पड़ेगी. इसके लिए हमें एक मंच पर एक स्वर में एक ही बात कहनी होगी और अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सार्थक संघर्ष करना होगा. विशिष्ट वक्ता अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के श्री अरूण अग्रवाल ने कहा-'मीडिया ही मानावाधिकार की सही सम्यक जानकारी दे सकता हैं किन्तु पत्रकार अपनी ही आवाज नहीं उठा पाते इसीलिए उनकी मौलिक सूविधाएं भी उन्हें नहीं मिल पाती. आज जरूरत हैं कि देश में मीडिया कौंसिल की स्थापना की जाय और उसे अधिकार सम्पन्न बनाया जाए. कर्मनिष्ठा भोपाल के सम्पादक श्री मोहन आनन्द तिवारी ने कहा-'आज सामाजिक मानदण्ड बदल गये हैं इसलिए कानून के दायरे में रहकर मानवाधिकार की बात करना एक चिन्ता का विषय हैं. मीडिया में हताशा को स्थान नहीं मिलना चाहिए. लखनउ से आये यशोदानन्दन के सम्पादक एवं अन्तर्राष्ट्रीय मानवधिकार परिषद के अध्यक्ष कृष्ण गोपाल यादव ने मानवाधिकार आयोग की विस्तृत जानकारी दी. समारोह का संचालन महासंघ के संयोजक डॉ० भगवान प्रसाद उपाध्याय ने किया और स्वागत राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामबाबू चौबे तथा आभार प्रातीय संगठन मंत्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. इसमें डॉ० अनवार अहमद, रिजवान चंचल, डॉ० रामसेवक शुक्ल आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रहीं.

समापन सत्रः सम्मान समारोह

५ फरवरी को कार्यक्रम के समापन सत्र में उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग में विशेष सचिव आई. ए.एस. ओमप्रकाश शुक्ला के मुख्यअतिथ्य में तथा जहाँगीर ममोरियल के निर्देशक डॉ० अनवार अहमद की अध्यक्षता में सम्मान समारोह का आयोजन हुआ. कार्यक्रम में सर्वप्रथम साहित्य श्री सम्मान सुपर इंडिया के संपादक व वरिष्ठ साहित्यकार श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' जी को सम्मानित करने से प्रारम्भ हुआ.

साहित्य के क्षेत्र में: साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ० प्रमोद प्रकाश सक्सेना, साहित्य गौरव, भोपाल, मप्र. श्रीमती तारा सिंह, महादेवी वर्मा, मुम्बई, श्रीमती हेमा उनियाल, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, नई दिल्ली, मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक'-जगदीश प्रसाद गुप्त सम्मान, पीलीभीत, डॉ० ओमप्रकाश बरसैयाँ ऊँकार-निराला सम्मान, झाँसी, ज़ेबा रशीद 'ज़ैबुन्निसाँ'-मुंशी प्रेमचन्द्र सम्मान, जोधपुर, राजस्थान, श्रीमती नीलम खरे-लक्ष्मीकांत वर्मा सम्मान, मंडला, म०प्र०, शिवेन्द्र त्रिपाठी-साहित्य गौरव, प्रतापगढ़, श्रीमती सुलभा माकोड़े-डॉ० रामकुमार वर्मा सम्मान, भोपाल, म.प्र, रमेश कटारिया'पारस' -रामवृक्ष वेनीपुरी सम्मान, भिण्ड, म.प्र., डॉ० ओमप्रकाश हयारण 'दर्द'-सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान, झाँसी, उ.प्र., दिनेश चन्द्र दुबे-उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, ग्वालियर, म.प्र., हरिचरण 'वारिज', निराला सम्मान, भोपाल, म.प्र., बी.पी.कोष्ठी 'सरगम'-शकुन्तला सिरोठिया सम्मान, रायसेन, म.प्र., डॉ० मोहन तिवारी आनन्द-मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, भोपाल, म.प्र, डॉ० दिवाकर 'दिनेश' गौड-साहित्य गौरव, गोधरा, गुजरात, पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'-मुंशी प्रेमचन्द्र सम्मान, सागर, म०प्र०, डॉ० एन०एस०शर्मा-साहित्य गौरव, मुम्बई सूर्यदेव पाठक पराग-साहित्य गौरव सम्मान, गोरखपुर, रमेश यादव-साहित्य गौरव सम्मान, इन्दौर, म.प्र., डॉ० शिव चौहान 'शिव', मोती बी.ए., रतलाम, म.प्र. प्रो.(डॉ०) शरद नारायण खरे-स्व०ओकार नाथ दूबे शिक्षक सम्मान, मंडला, म०प्र०, श्री संजय कुमार चतुर्वेदी 'प्रदीप'-युवा प्रतिभा सम्मान, लखीमपुर खीरी, उ०प्र०, ईश्वर शरण शुक्ल-युवा प्रतिभा सम्मान, इलाहाबाद, अभय कुमार ओझा- प्रशस्ति पत्र, खगड़िया, बिहार, श्री महेन्द्र श्रीवास्तव 'अधिवक्ता'-प्रशस्ती पत्र, दमोह, मध्य प्रदेश, अशोक कुमार गुप्ता, इलाहाबाद

समाज के क्षेत्र में-समाज सेवा में क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए **श्री सुशील कुमार पाण्डेय-साहित्य श्री**, नई दिल्ली, बी.एल.शर्मा-समाज गौरव, इलाहाबाद, किशन कुमार सिंह-समाज गौरव-बिहार को सम्मानित किया गया.

पत्रकारिता के क्षेत्र में: पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए-नवभारत हिन्दी दैनिक सतना के संपादक श्री संजय पयासी, प्रियंका पाक्षिक लखनऊ के सपांदक श्री रामप्रकाश वरमा, अन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार के संपादक श्री अरूण अग्रवाल, धन्वन्तरि, जौनपुर के संपादक पं. वी.डी.मिश्र, अद्वैत तिवारी, आर. के.यादव, रिजवान चंचल, राहुल दुबे सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम के अंत में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस तरह के आयोजनों से साहित्यकारों, पत्रकारों व समाजसेवियों का मनोबल बढ़ता हैं. ऐसे आयोजन के सूत्रधार श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी बधायी के पात्र हैं. इनका यथासम्भव सहयोग कर मनोबल बढ़ाना चाहिए.

अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. अनवार अहमद ने कहा कि श्री द्विवेदी विगत कई वर्षो से इस तरह के आयोजन करते आ रहे हैं. मैं इनका यथासम्भव सहयोग करता रहता हूं.

साहित्य मेला पर विचार

० कार्यक्रम सराहनीय रहाः **कृष्ण कुमार गिरि,** इलाहाबाद

० कार्यक्रम अपने ढंग से सराहनीय रहाः **जवाहरलाल तिवारी**, इलाहाबाद

० कार्यक्रम ओजस्वी, सार्थक एवं सराहनीय रहाः **श्रीमती हेमा उनियाल**, नई दिल्ली

० कार्यक्रम विशेष सराहनीय रहाः **आर. पी.उनियाल**, नई दिल्ली

० कार्यक्रम अविस्मरणीय रहाः **रमेश कटारिया**, ग्वालियर,

० कार्यक्रम के संयोजक की सामर्थ्य सीमा के अनुसार सही रहा यह कार्यक्रमः **श्रीनिवास चतुर्वेदी**, बरेली,

० आयोजकों का श्रम सार्थक लगाः **सूर्यदेव पाठक'पराग'**, गोरखपुर

० कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर रहाः **आर०के. यादव**, बहराइच

० इस कार्यक्रम में जो कुछ भी देखने, सुनने को मिला वैसा कभी नहीं देखाः**पंचम सिंह**, इलाहाबाद

० कार्यक्रम प्रशंसनीय रहा. अनवरत ऐसा कार्यक्रम होना चाहिएः **बी.आर.विमल**, लखनउ

० पत्रकारिता समाज को दिशा निर्देश देती हैंः **दीपक दीवाना**, इलाहाबाद

० आयोजन की आर्थिक विषमता से जूझते हुए जिस लगन और कर्मठता से आप साहित्य की सेवा कर रहे हैं वह सराहनीय है. कुछ व्यवधान रहें और रहते हैं किन्तु आप अपनी सामर्थ्य में सफलता प्राप्त करते रहेगेंः **डॉ० प्रमोद सक्सेना**, भोपाल

० आपके द्वारा आयोजित साहित्य मेला को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई. हम ऐसे

कार्यक्रम में बैठी श्रीमती हेमा उनियाल व बुद्धिजीवी

सफल आयोजन के लिए आयोजकों के आभारी है: **राजेश कुमार सिंह**, इलाहाबाद

०आपके द्वारा आयोजित साहित्य मेला में आकर अति प्रसन्नता एवं गौरवन्वित महसूस कर रहा हूँ. आप सभी के द्वारा किए गए उद्‌बोधन अभिभाषण एवं मार्गदर्शन का आभार व्यक्त करते हुए विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के विस्तार, मजबूत संगठन एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ. नवयुवकों में पत्रकारिता के प्रति आपके द्वारा अपने शब्दों के माध्यम से प्रदान की गई ऊर्जा हम सभी के लिए आपका आर्शीवाद हैं आप सभी का कोटि वंदनः **सत्येदव राजपूत** एडवोकेट, रायबरेली,

० आपके द्वारा आयजित साहित्य मेला को देखकर काफी प्रसन्नता हुई. मुझे आपके द्वारा निरन्तर किसी न किसी रूप में पत्रकारों व साहित्यकारों की गोष्ठी विगत कई वर्षो से देखकर प्रसन्नता हो रही हैं. इससे नयी युवा पीढ़ी के पत्रकारों को काफी ऊर्जा प्रदान होती हैं. **रवीन्द्रकान्त पाण्डेय**, संवाददाता, जनसत्ता, कौशाम्बी

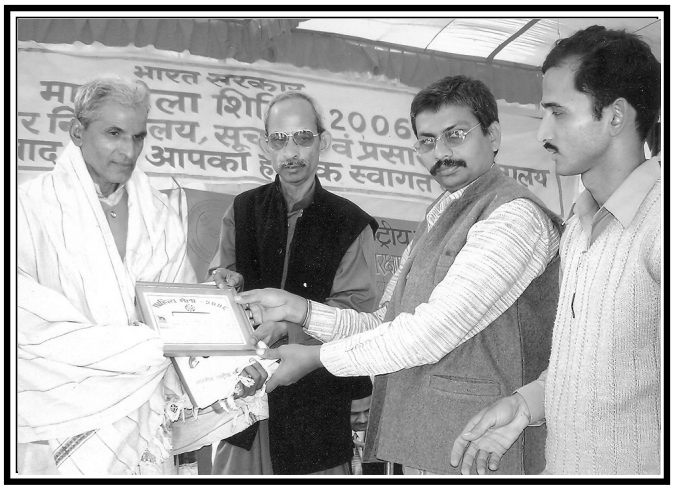

वरिष्ठ साहित्यकार श्री वृन्दावन त्रिपाठी 'रत्नेश' को सम्मानित करते नवभारत के संपादक श्री संजय पयासी, प्रियका कं संपादक श्री रामप्रसाद वरमा एवं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरणविद् एवं संपादक श्री अरूण कुमार अग्रवाल को करते नवभारत दैनिक के संपादक श्री संजय पयासी

कर्मनिष्ठा के संपादक डॉ० मोहन आन्नद तिवारी को सम्मानित करते एवं कार्यक्रम संयोजक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

स्नेह कहॉनी

वसीयत

✍डॉ राज बुद्धिराजा

"दादी-मॉ, वसीयत क्या होती है?"

"चल हट! कैसी-कैसी बातें पूछने लगा है, रे." मीठी डपट लगाते हुए पारो ने कहा.

"मैं क्या? सभी वसीयत की बात करते हैं."

यह बच्चा भी बड़ी-बड़ी बातें करने लगा हैं-पारों ने मन-ही-मन कहा. "सभी कौन?"

"मम्मी, पापा, चाचा, चाची, ताया, ताई."

"किसकी वसीयत की बात करता हैं तू?" पारों ने बच्चे की पीठ थपथपाते हुए तह तक जाने की कोशिश की.

"आपकी और किसकी" सभी यही कहते हैं, अब तो दादी मॉ को वसीयत कर लेनी चाहिए. वे रिटायर हो गयी हैं न."

"चल हट, पगला कहीं का."

खेल-खेल में बच्चा जैसे आया था वैसे ही चला गया. तो सब लोग यही खिचड़ी पकाते रहते हैं. पारों कुछ गहरे डूब गयी. अभी उसकी रिटायरमेंट को कुछ ही महीने हुए थे. उसने अपनी हर रोटी अपने ही पसीने से खरीदी थी. इसलिए, पैसे-रोटी और पसीने की अहमियत से वह बखूबी वाकिफ थी. उसे अब यह भी याद है कि शादी के बाद उसे चौदह वर्ष लग गये थें, अपना रास्ता खोजने में. पहली बार जब उसे तनख्वाह मिली, तो वह खुशी से फूली नहीं समायी थी. दो-दो रूपयें अपने बच्चों को दिये और दो रूपये का प्रसाद मंदिर में चढ़ाया. स्वभाव से मितव्ययी होने के कारण आधे से ज्यादा तनख्वाह बच गयी थी. उसे अब भी याद हैं कि अपने घर आने वाले हर अतिथि की वह आवभगत करती और सौ रूपया देकर विदा करती. वसीयत की बात उसके लिए नई नहीं थी. बार-बार उसके सामने कहा जाता था. भले ही, वह दबी जबान में क्यों न हो?

"मॉ, तुम्हें प्रॉविडेंट फंड का पूरा पैसा मिल गया न."

"पेंशन का भी हो गया न."

"सब कुछ करा लेना चाहिए. सरकारी काम तो वैसे ही होते हैं."

"मॉ बहुत होशियार हैं. सब कुछ पहले से ही करा लिया होगा."

पारों इन सबको जली निगाहों से देखती और मोटर में बैठकर चली जाती. सच तो ये हैं कि उसके पैसे पर घर के सभी लोगों की नजर थी. पारो यह जानती थी कि आगे आने वाली सात पीढ़ियां न तो इतना पैसा कमा सकती हैं और न इतनी प्रतिष्ठा. लूले-लगड़े हैं, ये सब. खुद कुछ कर नहीं सकते और दूसरे की दौलत पर गिद्ध नजर रखते हैं. खून के इन रिश्तों से पारों को सख्त नफरत हो गयी थी. वसीयत न हुई अलादीन का चिराग हो गयी. हिम्मत है तो बचाओं न. 'खुल जा सिमसिम', कहने से काम थोड़ी चलेगा. पारो बीच-बीच में डांट-फटकार लगाती रहती. पता नहीं क्यों इन लोगों में असुरक्षा की भावना घर करती जा रही है. इन्हें डर है कि मां अपना खूबसूरत घर किसी संग्रहालय में न बदल दें. अपना पैसा अपने प्रिय शिष्यों को न दें दें. जब इन्होंने देखा कि उनका असर पारों पर रत्ती भर नही हैं, तो उन्होंने उनके मित्रों से कहलवाना शुरू किया. "पारो, तुम अपनी वसीयत क्यों नहीं कर देती? जिंदगी का क्या भरोसा? पता नही, प्राण-पखेरू कब उड़ जाए?" एक मित्र ने कहा.

"तुम अपना रास्ता नापो. मुझे तो अपनी जिदंगी पर पूरा भरोसा हैं, क्योंकि मैंने अपनी जिंदगी को मांजा-चमकाया और सजाया-संवारा हैं. भरोसा नहीं हैं, तो इन गिद्धों का. ये तो मुझें नोंच-नोंचकर खा लेंगे. ना जाने कितनी बार इन्होंने मुझसे लाखों रूपये ऐंठे हैं. यह कहकर कि हम जल्दी लौटा देंगें. पर वह दिन आज तक नहीं आया. और, हां! जहां तक प्राण-पखेरू के उड़ने का प्रश्न हैं, वह इस दस द्वारे पिजंरे को छोड़कर कभी नहीं उड़ेगा. उसका भी सुंदर तन और मन से लगाव हो गया हैं. जहाज पर बैठे पंछी की तरह ये मेरा आत्मा यहीं बसा रहेगा, हमेशा के लिए." उस मित्र को ये पता नहीं था कि पारों दर्शन के महज संसार में डूबी रहती हैं. बड़े-बड़े साधु संतो को उसने डिगते हुए देखा था. पारो हैं कि चट्टान की तरह उसके सामने खड़ी हैं. सिर्फ उसने गेरूआ नहीं पहना था. बात यहीं तक रहती, तो बात भी थी. पारों की अस्वस्थता पर किसी के ५०० रुपये खर्च हो गये, तो घर में तूफान आ गया.

"मैंने तुमसे कहा था न मॉ कि तुम अपनी बीमारी का बीमा करवा लों. पर तुम हों कि सुनती नहीं हों." एक आवाज आयी.

"पता हैं इलाज कितना मंहगा हो गया हैं. लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं"

पारों ने आव देखा न ताव, उसने अपने पर्स में से एक पांच सैा का और

एक बीस का नोट निकाला और उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "ये लो पांच सौ रूपये और ये लो बीस रूपये, उसका सूद. तुम लोगों को याद है कि तुम जन्म के बाद लुंज-पुंज की तरह बिस्तर पर पड़े रहते थें. कितनी-कितनी बार मैंने अपने पेट पर पट्टी बांधकर तुम लोगो की सेवा की. खबरदार. यदि तुम लोगों ने मेरी बीमारी के बीमे की बात की." और पारों मोटर में बैठकर चली गयी थी. उसके मन में क्या तूफान उठा रहा था, कोई नहीं जानता. वैसे उसने जिंदगी में बहुत बड़े-बड़े फैसले अकेले ही लिये थें. इस बार भी फैसला लेते समय उसने लौह पुरूष का रूप धारण कर लिया था.

एक दिन सुबह-सुबह तीन चार मोटरों में कुछ लोग आये और पारों उन्हें घर की एक-एक वस्तु बताने लगी. विदेशी मित्रों से मिले अमूल्य उपहार, पुस्तकें, धरोहरी चित्र सब कुछ उसमें शामिल था. वह एक अधिकारी को कुछ समझाने में लगी थी, "ये संग्रहालय एक महीने में तैयार हो जाना चाहिए, मैं महीने भर बाद लौटूंगी."

"कहां जा रही हो, मॉ,"सबने एक साथ पूछा।

"मैं कहीं नहीं जा रही. जा तो तुम लोग रहे हो. तुम लोगों के लिए मैंने एक मकान किराये पर देख लिया हैं. " और पारो ने टेंपो में बैठे ड्राइवर को और दो आदमियों को भीतर बुलाकर कहा-"ये सारा समान नये वाले घर में पहुंचा दो."

पारो ने अपने पोते को बुलाकर कहा, "बेटे, वसीयत ये होती हैं." और वह मोटर में बैठकर चली गयी थी.

(लेखिका विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान की संरक्षिका एवं भारतीय जापान सांस्कृतिक परिषद, की अध्यक्षा है)

डॉ. वर्षा पुनवटकर सम्मानित

राजश्री स्मृति न्यास साहित्यिक संस्था, कलकत्ता के तत्वावधान में सम्मान श्रृखंला-५४ के अन्तर्गत १७ दिसम्बर २००५ को पश्चिम बंग बाङ.ला अकादमी के जीवनानन्द सभागार में कवयित्री डॉ. वर्षा पुनवटकर 'बरखा' , वर्धा महाराष्ट्र का सम्मान अलंकरण अनुष्ठित हुआ. अतिथियों के मंचस्थ होने के पश्चात उत्सवमूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर द्वारा राजश्री के चित्र पर पुष्पांजलि से प्रारम्भ हुआ. कार्यक्रम में प्रो. डा. वसुधर मिश्र, कविवर राधेश्याम पोद्धार एवं अशोक सिंह अकेला मंच पर विराजमान थे. साहित्यकार श्यामलाल उपाध्याय ने उत्सव मूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर के संक्षिप्त वृत का आलेख पढ़ा. श्रीमती कुसुम पारीक ने अंगवस्त्र, श्री लक्ष्मी जायसवाल ने श्रीफल, रोहित जायसवाल ने लेखनी, कविवर सत्य नारायण सिंह 'आलोक' ने स्मृति चिन्ह श्री विजय प्रसाद ने 'समृद्धिका सदुपयोग ग्रंथ द्वारा उत्सव मूर्ति डॉ. वर्षा पुनवटकर का सारस्वत सम्मान अनुष्ठित किया. सम्मान ग्रहण करने के पश्चात डॉ० वर्षा ने उमड़े जन प्रवाह के सम्मान से आत्म विभोर होकर अपनी प्रसन्नता की अनुभूति को कविजन-श्रोतागण के प्रति साभार धन्यवाद ज्ञापन के रूप में प्रस्तुत किया.

प्रा. सोनवणे राजेंद्र को स्व. भंवरी बाई गोधा स्मृति साहित्य पुरस्कार

बीड़, महराष्ट्र. से प्रकाशित हिंदी मासिक 'लोकयज्ञ' के संपादक प्रो. सोनवणे राजेद्र 'अक्षत' को हाल ही में राजस्थान साहित्य अकादमी शाखा कोटा की ओर से पुरस्कृत किया गया.

कोटा, राजस्थान में अखिल भारतीय साहित्य परिषद का आयोजन किया गया था. सम्मेलन के समापन सत्र में प्रो. सोनवणें राजेन्द्र अक्षत को राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा एवं विकास तथा उत्कृष्ट साहित्य सृजन हेतु ११०१ रुपये का स्व० श्रीमती भंवरी बाई गोधा स्मृति साहित्य पुरस्कार, स्मृतिचिन्ह, सम्मान पत्र के साथ राजस्थान साहित्य अकादमी के महामंत्री डॉ० कृष्णाचद्र व वरिष्ठ साहित्यकार गजेन्द्र सिंह सोलकी के हाथों प्रदान किया गया.

पृष्ठ १६ का शेष भाग....

मानस की बहुप्रयोजनियता

तदनुसार ही उसे विरति, विवेक अथवा सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी. योग और भोग दोनों प्रकार के कारकों को एक स्थान पर संयोजित करने में मानसकार की यह सोच रही हैं कि सुख सम्पत्ति प्राप्त करने की आकांक्षायुक्त व्यक्ति का कदाचित ध्यान विरति और विवेक के कारकों पर जाकर उसके जीवन की दिशा बदल सकता हैं. यदि इसमें केवल योग के पक्ष को ही समाहित किया जायेगा तो भोग की प्रवृत्तियुक्त व्यक्ति उसे पढ़ेगा ही नहीं. सन्दर्भित फलश्रुति मिथ्या नहीं हैं बल्कि यही मानस की बहुप्रयोजनीयता हैं. साहित्य की व्यापकता और उपादेयता उसकी बहुप्रयोजनीयता पर निर्भर हैं. जनता महाविद्यालय, अजीतमल, औरैया, उ.प्र०

हिन्दी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की कड़ी

✍ एस.बी.मुरकुटे

भाषाओं के माध्यम से किसी भी समाज के राष्ट्र का चरित्र मुखर होता हैं. भारत बहुभाषी देष है लेकिन भाषाओं की अपार विविधता के बावजूद भारतीयता का सूत्र हम भारतवासियों के दष्ष्यों को जोड़ता आया हैं.

राष्ट्रीय एकता को सुदष्ढ़ करने के लिए आदि शंकराचार्य जी ने चार पवित्र धाम की संकल्पना की और व्यवस्था की. अपने देष के चार अलग–अलग कोनों पर स्थित 'चारधाम' की यात्राओं को ही लीजिए तो यह देष की एकता का बहुत बड़ा साधन सिद्ध होती हैं. उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पष्चिम सभी जगह के लोग जब चारों धाम जाते हैं, तो उनका एक दूसरे से मिलन होता है, प्रेम भाव बढ़ता हैं, और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता हैं. सबकी सम्पर्क भाषा हिंदी ही थी. इस प्रकार हिंदी सांस्कष्तिक एकता के जरिए राष्ट्रीय एकता की मजबूत कड़ी सिद्ध होती हैं.

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो बड़ी आसानी से पढी, बोली और समझी जा सकती हैं. महात्मा गॉधी, विनोबा भावे, भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गॉधी और राजीव गॉधी का मत था कि हिन्दी ही राष्ट्रीय एकता की कड़ी हैं. हिंदी देष को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण भाषा हैं. हिंन्दी राष्ट्रीय एकता का माध्यम हैं.

हिमालय से निकली हुई हिन्दी रूपी गंगा में समस्त भारतीय भाषाओं का जल समाहित हैं और उसी जल का अभिषेक कर हमें भारतीय जनमानस को राष्ट्रीयता, अखंडता, एकता और सर्वधर्म समभाव के आगमन से पवित्र करने का जीवनदायी कार्य करता हैं. 'एक हष्दय को भारत जननी', 'एक वसुधैंव कुटंबकम' की भाषा को प्रेम से लोग अपनाऍ, इसके लिए प्रयत्न करना हैं हमारा देष भारत विभिन्न क्यारियों से एक सजा हुआ सुन्दर उद्यान है, इसमें तरह–तरह की क्यारियॉ हैं, इसके बावजूद उसका अपना एक रंग हैं. ठीक उसी तरह आकाष में सात रंगों के सुन्दर समन्वय का एक नाम इंद्रधनुष हैं. इसी तरह हमारा भारत हैं.

हिन्दी को केवल बोल–चाल के स्तर पर ही संपर्क भाषा नहीं बनाना हैं बल्कि उसे साहित्य, कला और संस्कष्ति के स्तर पर भी संपर्क भाषा की भूमिका निभानी हैं. इसके लिए आवष्यक हैं कि भारत की अन्य भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य को हिन्दी में अनुवाद हों ताकि यदि कोई भी व्यक्ति अन्य भाषाओं का साहित्य जानना चाहे तो वह उसे हिन्दी के माध्यम से प्राप्त हो जाए. हमारा साहित्य एक है तो लोगों में भावनात्मक एकता स्थापित होगी, जो किसी भी राष्ट्र में आवष्यक नहीं, बल्कि अनिवार्य हैं.

हम राष्ट्रीयता के अखंड सूत्र में बंध जाते हैं तेलगू कवि 'षंकरैया' कहते हैं: "मैं अनवरत रुप से अपने देष की भूमि से जुड़ा हुआ हूँ. मैंने जन्म लिया हैं और मैं इस मातष्भूमि का ऋण चुकाने को तत्पर हूँ और उसी मातष्भूमि के लिए पूरे भारत ने एक साथ मिलकर आजादी की लड़ाई लड़ी थी."

गंगोत्री से लेकर दक्षिण गंगोत्री तक हिन्दी की जययात्रा राष्ट्रीय एकता में हिंदी के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करती हैं. हिन्दी हम सब की श्रद्धा स्नेह की हकदार हैं. इसे अपना कर हम भारत की प्रगति में राष्ट्रीय एकता के महत्वपूर्ण यज्ञ में अपना योगदान अवष्य दें. सच है हिन्दी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की कड़ी हैं. हिन्दी को बढ़ाना हम सबका परम कर्तव्य हैं.

– आनंद नगर, सेकण्ड क्रॉस,
बड़गॉव–5, कर्नाटक

पत्रिका के लिए नियम

१. पत्रिका के १५ तारिख तक न मिलने पर हमें लिखें.

२. पत्रिका की सहयोग राशि संपादक, विश्व स्नेह समाज, एल.आई.जी. -६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा इलाहाबाद, उ.प्र. के पते पर विश्व स्नेह समाज के नाम से बनाए गये धनादेश नाम से बनवाए गये बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

३. पत्रिका के लिए लेख तथा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ही ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजें. फोटो अथवा कार्बन कापी स्वीकार्य नहीं हैं. प्रकाशन सामग्री पत्रिका के अनुकूल होनी चाहिए. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें.

४. किसी पर्व अथवा अवसर विशेष सामग्री हमें अवसर से डेढ़ दो माह पूर्व भेजें.

५. रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकट लगा लिफाफा संलग्न अवश्य करें, अन्यथा अस्वीकृति की दशा में रचना वापस करना सम्भव नहीं होगा.

६. पत्र व्यवहार करते समय अथवा धनादेश भेजते समय अपनी सदस्य संख्या अथवा पत्रांक संख्या का उल्लेख अवश्य करें. जो पते के ऊपर लिखी होती हैं यह पता प्रत्येक अंक के पीछे चिपका होता हैं.

व्यक्तित्व

बहुमुखी प्रतिभा की धनी श्रीमती हेमलता उपाध्याय

नामः श्रीमती हेमलता उपाध्याय
जन्म तिथिः 16 अक्टूबर 1943, हरदा
पतिः श्री ललित नारायण उपाध्याय
माता–पिताः श्रीमती सुषीलादेवी पारे
डॉ श्री हरिशंकर चुन्नीलाल पारे (न्यायाधीष)
प्रभाव प्रेरणाः डॉ. श्रीयुत् श्रीधर पारे 'राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त', उपपुलिस अधीक्षक, प्रो. डॉ. श्रीमती रूपकमल पारे
शैक्षणिक योग्यताः एम.ए. (संस्कृत) प्रथम श्रेणी में प्रथम, गोल्ड मेडल प्राप्त, बी.एड. कोविद्
संप्रतिः प्रधानाध्यापिका, महारानी लक्ष्मी बाई कन्या उ.मा.षाला
षिक्षाः वर्धा, हरदा, सागर विष्वविद्यालय
विषेषः अपने प्रारंभिक षिक्षा काल से विष्वविद्यालय तक सर्वत्र प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त वर्ल्ड युनिवर्सिटी तथा मध्य प्रदेष शासन षिक्षा विभाग एवं अन्य संस्थाओं से छात्रवृत्तियां प्राप्त. सागर विष्वविद्यालय में नियमित छात्रा के रूप में आर्ट्स फेकल्टिज़ का प्रतिनिधित्व. सैनिक षिक्षा, गाईड्स, संगीत, नृत्य नाटिकाएं, कठपुतली एवं सांस्कृतिक विषयों में बचपन से उल्लेखनीय भागीदारिता पुरस्कार एवं सम्मान
लेखनः षिक्षा, मनोविज्ञान निबंध, महिला उपयोगी साहित्य, भारतीय इतिहास, संस्कषति, संस्कष्त एवं संस्कषति संबंधी विषयों में गहरी रूचि.
प्रकाषनः नई दुनिया, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाईम्स, मनोरमा, हिन्दू विष्व, नारी जगत जैसे उत्कष्ष्ठ ग्रंथो में रचनाएं प्रकाषित. अभिनंदन ग्रंथों में रचनाए. ग्रंथ 'षिक्ष के बढ़ते चरण' एवं जीव–जन्तुओं की आष्चर्यजनक बातें, वर्ष 1990,निमाड़ी लोकगीत का संकलन, व्याख्या तथा ध्वन्यान्कन के साथ दो कषतियां शीघ्र प्रकाषित. अनेक नाट्य प्रकाष्य.
अन्य मौलिक लेखन–एड्स एवं भाई की याद, सरस लोकगीत
प्रसारणः लेख, आलेख, साक्षात्कार, आकाषवाणी भोपाल, इंदौर, खंडवा टी.वी.कार्यक्रम–वार्ताएं, साक्षात्कार, गुलफाम निमाड़ कार्यक्रम– दूरदर्षन भोपाल एवं इन्दौर–
निर्देषित कार्यक्रमः लवकुष, भक्त प्रहलाद, भक्त ध्रुव, संपूर्ण रामायण राज्य एवं राष्ट्र स्तरीय नष्त्य नाटिकाएं
कैसेटः पयली पेंसिंजर सी आवजों जी, 02 में रिलीज
प्रमुख सम्मान– जेसीस एण्ड जॉईण्ट ग्रुप ऑफ मालवा, खण्डवा, आकाषवाणी इंदौर, अखिल भारतीय नार्मदीय महिला सभा, भोपाल, नर्मदा भवन ट्रस्ट–नार्मदीय गौरव सम्मान, नार्मदीय सभा मुम्बई तथा बड़ौदा द्वारा सम्मानित
संस्थापिका सदस्याः निमाड़ लोक कला संगीत, साहित्य एवं संस्कषति कला मंडल, खण्डवा स्थापना वर्ष 1968, प्रभारी अध्यक्षा एवं सक्रिय सदस्या नार्मदीय महिला मण्डल, खण्डवा, संस्थापिका सदस्या व सहसचिव भारतीय बाल व युवा कल्याण संस्थान न्यास खण्डवा, निमाड़ लोक संस्कषति न्यास खण्डवा, सक्रिय सदस्या गायत्री परिवार–हरिद्वार.

घमंड

1.एक मूंग को लगा कि मैं बहुत बड़ा हो गया हूँ. वह फूले नहीं समा रहा था, परंतु जब वह घूमा तो उसे पता चला कि सभी मूंग उसके समान ही बड़े थें वह मन ही मन बोल उठा–'मूँग से मूँग, बड़ा नहीं होता.' उस दिन से उसका घमंड जाता रहा.
2.गुलाब को छूओं तो पहले कॉटें सामने आते हैं. शहद को पाने के लिए पहले मधुमक्खियों से निपटना पड़ता हैं. पहले कठिनाईयॉ उठा लों आगे तो आपकी जीवन में 'षहद ही शहद' मिलेगा.
3.एक बार फूलों को अपने रूप–सौंदर्य पर घमंड हो गया. उन्होंनें कॉटों से कहा–'तुम दूर हो जाओं तुम्हारे कारण हमारा रूपकमल भद्दा हो उठता है. काँटें फूलों से दूर चले गए।
उधर मनुष्यों ने फूलों को नोंच डाला. उनकी एक–एक पंखुडी नष्ट कर डाली. फूल बहुत पछताए. उनका समूल नाष नजदीक था. उन्होंने कॉटों से पुनः अपना स्थान ले लेने का निवेदन किया. अब फूलों के कष्ट कम हो गए.
उन्होंने अपने जीवन में कोई कठिनाई कभी भी महसूस नहीं की, क्योंकि कठिनाईयों का सामना करके ही वे आगे जो बढ़े थें.

ललित नारायण उपाध्याय
ईषकष्पा सदन, 96, आनंद नगर, खण्डवा, 450001

व्यंग्य

ग़म ले लो

गम ले लो
की आवाज लगाते
गमले वाले ने
द्वार पर खड़ी
महिला से कहा
बहन, गम ले लो
सुन कर महिला
बोल पड़ी
क्या लूँ?
पहले ही बहुत
गम हैं
जिंदगी में।

रितेन्द्र अग्रवाल,
11/500, मालवीय नगर, जयपुर–302017

पर्यटन

श्री अमर नाथ जी

✍अखिलेश कुमार मिश्र

भूखे को अन्न, प्यासे को पानी।
यही है बाबा, बर्फानी की कहानी।।

श्री अमरनाथ बाबा का परम पावन धाम कश्मीर में हिमालय पर्वत पर समुद्र तट से १२७२९ फीट की ऊँचाई पर, पर्वतों के मध्य- ६० फीट लम्बी ३० फीट चौड़ी तथा १५ फीट ऊँची प्रकृति निर्मित गुफा है.

इसी गुफा में हिम (बर्फ) द्वारा निर्मित प्राकृतिक पीढ पर हिम निर्मित शिवलिंग है. परम आश्चर्य यह है कि बाबा का चबूतरा तथा शिवलिंग पक्की बर्फ का हैं जबकि दूर-२ तक गुफा के बाहर सर्वज्ञ ही कच्ची बर्फ मिलती हैं. यह धाम ५१ शक्ति पीठों में से एक है और वहॉ पर आक्सीजन कम होने तथा सूर्य की किरणें न पहुँच पाने की वजह से जीव जन्तु, पेड़-पौधें, घास-फूस इत्यादि नहीं है फिर भी जब श्रावण की पुर्णिमा के एक माह पूर्व से दर्षन गुफा में भक्तों की भीड़ आकर एक जोड़े कबूतर-कबूतरी का दर्शन करती हैं तो भगवान भूत-भावन भोलेशंकर की वाणी से निकली, मॉ पार्वती को सुनाने हेतू अमरकथा का स्मरण अपने आप होने लगता हैं. यह यात्रा श्रावणी पूर्णिमा को बंद हो जाती हैं. पूरे वर्ष में एक माह तक करोड़ो हिन्दू भाई इस दुर्गम यात्रा को पूर्णकर, दर्शन का लाभ लेते हैं.

कहा जाता है कि जब माता पार्वती ने भगवान शिवजी से यह हढ किया कि अब बार-२ मरने और जीने के इस बंधन से मुक्त होकर सिर्फ आपके साथ ही रहना चाहती हूँ तो भगवान शिवजी ने उनसे कहा कि ऐसा नहीं हो सकता. फिर भी भोलेनाथ को उनके हढ के आगे झूकना पड़ा और अमरकथा सुनाने का वायदा किया. लेकिन भोले नाथ यह चाहते थे कि यह कथा इन्हें एकान्त में सुनाऊँगा. यही सोचकर भोलेनाथ पार्वती जी को लेकर पृथ्वी लोक के हिमालय पर्वत पर जहॉ कि जीवधारी नहीं हैं पर आये थें. अमरकथा सुनने वाले प्राणी को यह वरदान था कि वह अमरत्व को प्राप्त होगा. भगवान षिव व माता पार्वती अपनी दृश्टि चारों तरफ दौड़ाई लेकिन उन्हें वहॉ कोई जीवधारी नजर नहीं आया. लेकिन ब्रहमा के लेखनी के अनुसार वहॉ पर पहले से ही किसी तोते का एक अण्डा पड़ा था. जिस पर भगवान शिव अपनी बाघम्बरी बिछाकर बैठना चाहते थें. अण्डा उसी के किनारे दब गया और बाघम्बरी के स्पर्श मात्र से अण्डे से एक तोते का जन्म हुआ, जब कथा आरम्भ हुई तो वह कथा कई दिनों तक चलती रही, माता पार्वती कथा सुनकर हुँकार लगा रही थी लेकिन बिधनानुसार उन्हें नींद आ गयी और उस समय हुँकारा कौन भरे यही सोचकर उस तोते ने पार्वती जी की ही तरह हुँकारा लगाना जारी रक्खा. जब कथा समाप्त हुई तो भूतभावन भगवान षिव जी ने देखा कि पार्वती तो सो रही हैं तो हुँकारा कौन लगा रहा था, यहीं सोचकर वे क्रोधित हो उठें, भगवान को क्रोधित देख तोता वहॉ से उड़कर फुर्र हो गया, पीछे-२ शिवजी उसे मारने के हेतु चल दिए. अनादिकाल में वहीं तोता शुकदेव जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जो कबूतर गुफा में मिलते हैं भक्त उनके दर्शन पाकर बहुत प्रसन्न होते हैं वे कौन है-

भगवान एक बार संध्या के समय नष्त्य कर रहे थे कि गण आपस में ईर्ष्या के कारण 'कुरु-कुरु' शब्द बोल रहे थें तब महादेव जी को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होनें अपने गणों को श्राप दे दिया कि तुम लोग दीर्घ काल तक यही शब्द 'कुरू कुरू करते रहो, उसी क्षण उनके गण कबूतर हो गये और वे ही आज तक उस गुफा में अमरनाथ बाबा के साथ वहॉ पर हैं. उनके दर्षन से मनुष्य जन्म जन्मान्तर तक अपने द्वारा किये पापों को धो डालता हैं और वह अमर लोक को प्राप्त होता हैं।

यह यात्रा भारत के अंतिम उत्तरी रेलवे स्टेशन जम्मूतवी उतरकर वहॉ से सड़क मार्ग से होते हुए गुफा तक जाने हेतू दो मार्ग हैं-१. जम्मू से श्रीनगर होकर पहलगॉव, चंदन बाड़ी, शेषनाग, पंचतरणी होकर जाता हैं. जहॉ यात्रियों को पैदल ४० किमी. की दूरी तय करनी पड़ती हैं. यहॉ जम्मू से पहलगॉव सड़क मार्ग की दूरी कुल ३५० किमी हैं.

२. जम्मू से श्रीनगर होकर कांगन, सोनामार्ग, बालताल होकर जाना होता हैं जिसमें पैदल १४ किमी. तक ही चलना पड़ता हैं परंतु इस मार्ग में चढ़ाई एक दम खड़ी होती हैं. यह यात्रियों के ऊपर निर्भर होता है कि वे किस मार्ग से जायेगें. भारतवर्ष के किसी भी शहर से जम्मू के लिए ट्रेने उपलब्ध होती हैं तथा महानगरों से हवाई मार्ग की भी व्यवस्था हैं. यात्री अपने सुविधानुसार यहॉ आ जाते है. वैसे भी कश्मीर तीर्थो का घर हैं. यहॉ पर आदिशक्ति जगदम्बा ने इसी क्षेत्र में अपना निवास स्थान बनाया हैं और उन्हें माता वैष्णों देवी के नाम से जाना जाता हैं. यात्री अमरनाथ जी का दर्शन करके वापस कटरा आकर मां का दर्शन अवश्य करते हैं और भगवान ब्रहमा, विष्णु, महेश ने भी इसे अपना निवास माना हैं, जिससे यह कश्मीर तीर्थमय हो गया. यहॉ ४७ शिवधाम, ६० विष्णुधाम तथा ३ ब्रहमधाम व २२ शक्ति धाम और ६०० जागधाम है.

जम्मू श्री नगर पहुचने हेतू- हवाई जहाज से-

इण्डियन एअर लाइंन्स व जेट एयरवेज की रोजाना उड़ाने हैं,इंडियन एयर लाईन्स

मन–भावन आदर्ष पति बने

✍कुमकुम षर्मा

अगर मौका लगे तो किसी किटी पार्टी मे जाएं और चुपचाप महिलाओं की बातों को गौर से सुने. पति की गैरमौजूदगी में इकट्ठी हुई सभी महिलाओं की बातचीत का मुख्य विषय पति ही होता है.

पतियों में पाई जाने वाली अनेक कमियों को लेकर मन किया कि इस परफेक्ट बाडी, परफेक्ट लुक, परफेक्ट ड्रेसिंग और परफेक्ट बच्चों के पैदा होने वाले माहौल में परफेक्ट पति की तलाश क्यों न शुरू की जाए. पति को परमेश्वर मानने वाले दिन अब लद गए. अब पति परमेश्वर नहीं, परफेक्ट होना चाहिए.

पति को पत्नियां चाहे परमेश्वर मानें या न मानें पर एक बात तो सच है कि वह कहने सुनने से परे हैं. पति कुल मिला कर एक महसूस करने की चीज हैं. आज समय की रफ्तार ने बहुत कुछ बदल दिया हैं. पुरूष हमेशा से ही सर्वगुणसंपन्न और सौंदर्य से परिपूर्ण पत्नी की चाह करता आया हैं. लेकिन आज युवतियां भी युवकों को सर्वगुणसम्पन्न देखना चाहती हैं. यही वह स्थिति हैं जिस से आज महिलाएं बचना चाहती हैं और तलाशती हैं परफेक्ट पति. परफेक्ट पति कहीं बनावटी चीजों जैसा तो नहीं? महिलाओं का मानना है कि परफेक्ट का मतलब बनावटी पति न होकर एक स्टाइलिश पति की चाहत हैं. यह चाहत हमेशा से मन के किसी कोने में छिपी रही हैं लेकिन अब खुल कर सामने आई हैं. पति द्वारा अपनाया गया स्टाइल व संवेदनशीलता ही उसे परफेक्ट की श्रेणी में खड़ा करती हैं.

युवतियों की इस सोच के पति अपने आप में कितना ही महत्वपूर्ण क्यों न हो उन के सामने महज पति मात्र ही बन कर रहें, ने ही परफेक्ट या आदर्श पतियों की मांग को बढ़ावा दिया हैं. आदर्श पति की चाहत में युवतियां ऐसा पुरूष तलाशती है, जो स्थिरचित्त, दृढ़विश्वासी, संतुलित, धैर्यवान होने के साथ-साथ टिकाऊ भी हो, जो स्टाइल से गले मिले और मौका मिलते ही गाल भी चूमें. यानी संपूर्ण पति वह, जो शादी के रोमांस को जीवित रखने के लिए काम करें और रोमांच को महज एक चोंचला कह कर किनारें न रख दें.

❋

के सम्पर्क सूत्र–
2542735, 2546086, 2431433
जेट एअरवेज– 2574312, 2574315, 2453888, 2453999 जहॉ से आप आरक्षण करा सकते हैं।
इसके अलावा और कोई जानकारी लेना चाहते हैं तो टूरिज्म आफिस, श्रीनगर, 2477305, 2472698, 2477224 से भी संपर्क कर सकते हैं.

मेजा रोड, इलाहाबाद

जब क्रोध आये तो खामोश हो जाओ:
अज्ञात
फुल अपनी खुशबू बॉटने नहीं जाता बल्कि लोग उसे अपने आप लोग लेने के लिए चले आते.
अज्ञात

पल दो पल मुस्काना सीखें

✍ डॉ0 त्रिलोकी सिंह

मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।
कटुता और द्वेष को त्यागें,
समय शेष हैं अब भी जागें,
नफ़रत की दीवार तोड़कर,
निन्दनीय कर्मो से भागें।
शिव बन विष को धरें कण्ठ में,
प्रेमामृत छलकाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।।
जन-जन का संत्रास हरे हम,
पाप-ताप का नाश करें हम,
हर मनुष्य के अन्तर्मन में,
प्रेम और विश्वास भरे हम।
सद्विचार सद्गुण सौरभ से,
जीवन को महकाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर,
पल दो पल मुस्काना सीखें।
कभी किसी को नहीं सतायें,
दीनों दुखियों को अपनायें,
भटक रहे हैं जो निज पथ से,
उनको उनकी राह दिखायें।
भूख प्यास से तड़प रहे जो,
उनकी सुधा मिटाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर,
पल दो पल मुस्काना सीखें।।
त्यागें सारी स्वार्थ भावना,
परहित की हम करें कामना
सभी सुखी हों, सभी निरामय
करें ईश से यहीं प्रार्थना।
सत्य अहिंसा दया स्नेह का
उर में भाव जगाना सीखें।
मन के सब दुर्भाव मिटाकर
पल दो पल मुस्काना सीखें।।

ग्राम-हिन्दूपुर,पो. करछना, इलाहाबाद -०१

❍

कानूनी वाद

समसामयिक एवं महत्वपूर्ण वाद

वैवाहिक मामलों में समझौता होने पर फौजदारी के मामले समाप्त कर दिये जाने चाहिए.–उच्च. न्यायालय –2003,51 ए. एल. आर. 222
वी.एस. जोश प्रति हरियाणा राज्य वाद

तथ्य–उक्त मामले में पति–पत्नी के मध्य विवाह के एक वर्ष बाद झगड़े उत्पन्न हो गये। कुछ समय बाद दोनों पक्षों में पारम्परिक समझौते के आधार पर तलाक हो गया। तलाक हो जाने के बाद फौजदारी के मामले में पत्नी ने यह शपथपत्र दिया कि पति से उसके विवाद समाप्त हो गये हैं और यह मामला समाप्त कर दिया जाये लेकिन फौजदारी के न्यायालय ने मामले समाप्त नहीं किये। उच्च न्यायालय ने भी रिपोर्ट निरस्त करने के इन्कार कर दिया। उच्चतम न्यायालय में इस मामले में अपील की गयी।

निर्णय–उच्चतम न्यायालय ने रिपोर्ट, परिवाद व फौजदारी के मुकदमें निरस्त करने के सिद्धान्तों की विस्तृत विवेचना की और अपने निर्णय में लिखा की धारा 498 ए का उद्देश्य पति और उसके उन रिश्तेदारों को दण्डित करना है जो पत्नी या उनके रिश्तेदारों को दहेज लेने के लिये प्रताड़ित करते हैं। लेकिन जहां दोनों पक्षों में समझौते हो गये है वहां तकनीकी बाधायें समझौते में बाधक नहीं बननी चाहिए। वैवाहिक मामले में न्यायालयों का कर्तव्य वास्तविक समझौते को प्रोत्साहित का प्रयोग करके फौजदारी के मुकदमें, प्रथम सूचना रिपोर्ट, परिवाद निरस्त कर सकता हैं।

प्रतिपादित सिद्धान्त–उच्चतम न्यायालय ने अपने उक्त निर्णय में यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि वैवाहिक मामलों में समझौता होने पर फौजदारी के मामले समाप्त कर दिये जाने चाहिए।

यदि प्रत्यक्षदर्शी साक्षीगण का परिसाक्ष्य विश्वसनीय न हो तब अभियुक्त को अपराध के लिये दोषसिद्ध नहीं किया जा सकता है.उच्चतम न्यायालय, 2003, पेज 447, द.नि.स. बलदेव एवं अन्य बनाम मध्य प्रदेश राज्य {दाण्डिक अपील संख्या 275 वर्ष 2001}दिनांक 6–1–2003 को विनिश्चित
माननीय आर.सी लहोटी, न्यायमूर्ति
माननीय बृजेश कुमार ...न्यायमूर्ति

निर्णय– भारतीय दण्ड संहिता, 1860–धारा302–के अधीन हत्या के अपराध के लिये–दोषसिद्धि –वैधता–मामला को प्रत्यक्षदर्शी साक्षीगण के परिसाक्ष्य पर आधाति–दोनों प्रत्यक्षदर्शी साक्षीगण एवं अभियुक्त व्यक्तियों के परिवार के मध्य काफी दिनों से दुश्मनी –नक्शानजरी साक्षीगण की साइकिलों एवं झाड़ियों की उपस्थिति प्रदर्शित नहीं करती थी–एस.एच.ओ. द्वारा प्राप्त टेलीफोन सन्देश का कोई अभिलेख नहीं–क्षेत्रीय मजिस्ट्रेट के पास प्रथम सूचना रिपोर्ट की प्रति भेजने में हुए विलम्ब का कोई स्पष्टीकरण नहीं–दोनों प्रत्यक्षदर्शी साक्षियों का कथन सत्य नहीं पाया गया–दोनों संयोगी साक्षीगण–साक्षीगण के घटनास्थल पर मौजूद होने का कोई ठोस कारण प्रदर्शित नहीं–इन दोनों साक्षीगण के परिसाक्ष्य विश्वसनीय नहीं–अभिनिर्धारित, इन दोनों साक्षीगण के परिसाक्ष्य के आधार पर दोनों अभियुक्तगण–अपीलाथेषसिद्धि मान्य नहीं की जा सकती है– दोषसिद्धि अपास्त–अपील अनुज्ञात।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 226 के अधीन रिट अधिकारिता में उच्च न्यायालय भारतीय दण्ड संहिता की धारा406 एवं 409/के अधीन अपराधों के लिये आरोपित किये गये अपीलार्थीगण को गिरफ्तार करने के लिये राज्य को निर्देश नही कर सकता है न ही वह अन्वेषण एजेन्सी को अरोप–पत्र दाखिल करने का निर्देश दे सकता है.उच्चतम न्यायालय पेज 395, द.नि.स. एम.सी.अब्राहम एवं अन्य बनाम महाराष्ट्र राज्य एवं अन्य {दाण्डिक अपील संख्या 1346–1352 वर्ष 2002 }
दिनांक 20–12–2002 को विनिश्चत
माननीय एन. सन्तोष हेगड़े..न्यायमूर्ति
माननीय बी.पी.सिंह.....न्यायमूर्ति

निर्णय–दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973–धारा 406 एवं 409/34–भविष्य निधि आयुक्त द्वारा एम.ए.पी.एल. के निदेशकों के विरूद्ध परिवाद–जिसमें धारा406एवं 409/34 के अधीन अपराध का अभिकथन किया गया था–दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा 438 के अधीन अग्रिम जमानत आवेदनपत्र अस्वीकृत–परिवाद पर कार्यवाही करने के लिये राज्य के विरूद्ध रिट याचिका–उच्च न्यायालय ने राज्य को एम.ए.पी.एल. के निदेशकों को गिरफ्तार करने एवं अन्वेषण अभिकरण को आरोप–पत्र दाखिल करने का निर्देश किया था–उच्चतम न्यायालय के समक्ष अपील–अभिनिर्धारित, उच्च न्यायालय का दृष्टिकोण उचित नहीं–अपील अनुज्ञात।

निर्दिष्टवाद–1980{1}एस.सी.सी. 554. 1994 एल.आर. 71 आई.ए. 203. 1970 {3} एस.सी.आर. 946. ए. आई. आर. 1968 एस.सी.117।

साहित्यकारों से

1.यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु0 100/–का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें
2.यदि आप अपनी कृति (काव्य संग्रह, ग़ज़ल संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध संग्रह, उपन्यास) प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो प्रकाशकों के यहॉ बारम्बार चक्कर लगाने से बचें. हमें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें:

बचपन से पूर्व कफ़न की ओर जाते बच्चों को बचाएं

कूड़े–कचरे, भिक्षा व बंधुवा मजदूरी में जिंदगी तलाषते बच्चों के षिक्षण स्वावलंबन में लगी सद्यः स्नात सेवा संस्था ज्योति अकादमी को आपकी आवष्यकता है. बिना किसी शासकीय अनुदान, विदेषी दान के, परिवार व मित्रों के सहयोग से इस कल्याण कार्य में समर्पित अकादमी की संचालिका 'नीलम' जी के अनुसार एक बच्चे पर मात्र दो सौ रूपए मासिक व्यय आता हैं. एक दो बच्चों उद्धार का दायित्व कोई भी खाता–पीता व्यक्ति स्वीकार कर सकता हैं विवाह, पार्टियों, मृत्युभोज आदि में लाखों स्वाहा करने वाले समर्थ समाज को इस दिषा में कुछ त्याग करना ही चाहिए. अपने ही क्षेत्र में संस्था की शाखा गठित करके भी इस परहित साधना में शरीक हुआ जा सकता हैं. समाज व सियासत की व्यवस्था बस बचपन से पूर्व कफन की ओर जाने को विवष इस मासूमों का निर्माण भी उन्हीं पंच–तत्वों से हुआ हैं जिनसे हम सबका. अपने–अपनों के लिए पषु–पक्षी कीट पंतगे सभी जीते–मरते हैं. मनुष्यता का आधार परोपकार हैं. इन बच्चों ने अभी कुछ भी जिया–देखा किया नहीं, इन्हें बचाने–संवारने से बेहतर समाज सेवा और क्या हो सकती हैं. चाहने लिखने बोलने के बावजूद हम 'षुभ के लिए क्रियाषील नहीं हो पाते. जो पहल कर रहे हैं, उनका हाथ तो हम बॅटा ही सकते हैं. इन बच्चों को बचाने के लिए सुश्री नीलम जी से जुड़े. राषन, वस्त्र, पाठ्य सामग्री भी स्वीकार.

मनुश्यता के प्रति आस्थावान संवेदनषील हमारे प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि वह इस संस्था को यथोचित तन–मन–धन से सहयोग प्रदान करें.

संपर्कः **नीलम,** प्रभारी ज्योति अकादमी, 145, पत्ता मोहल्ला, बागपत, गेट, मेरठ–250001, उ.प्र. दू.0: 01212401977

ग़जल

कर सकें तो भला कीजिए
मत किसी का बुरा कीजिए
हर कोई हो सुखी हर जगह
सबके हित में दुआ कीजिए
धर्मो मजहब सभी एक से
सारे मजहब मिला दीजिए
प्यार से दिल लबालब भरें
नफरतों को जुदा कीजिए
महकें सारे चमन विष्व के
फूल ऐसे खिला दीजिए
अम्न ही सारी धरती पे हो
दुष्मनी को भगा दीजिए
चंद घड़ियों के मेहमान हो
मौत आयेगी क्या कीजिए?
दिल में लोगों के ऐ साज तुम
अपना घर तो बसा लीजिए।

ज्ञानेन्द्र साज, अलीगढ़,उ.प्र.

अनचाहा पतझर

राजेन्द्र कुमार शुक्ल

वक्ष–वक्ष के गात–गात से,
हरित–पीत रंग पात झर गये।
वन उपवन तन हुए अनावष्त
पतझर का आभास दे गये।।
नीम पात हत डंढल सूने
इमली झरी ऑवला झर गये।
महुआ आम पलाष शक्तिहत
तुलसी गेंदा गुलाब झर गयें।।
शीत सिक्त धुतिहीन पंखुरी
रातों रात तमाम झर गयी।
शीत जलाकर भ्रम फैलाती
बिना सूर्य के गात जल गयी।।
ओला पाला कोहरा बदरी
जाने कैसी नजर लगाये।
शीत पूस की दोपहरी में
अर्ध बसन्ती असर दिखाये।।
मौसम बदला ऋतुयें बदली
हाड़ कॅपाती रातें बदली।
शत–षत वर्ष के मानक बदले
पषु पक्षी की आहट बदली।।
गरम धूप की नरम धूप की
चाह प्रकषति के सुधर रूप की।
अनजाने आहूत काल से
कितने जन के प्रान हर गये।।
वक्ष–वक्ष के गात–गात से
हरित पीत रंग पात झर गये।

बसनेहटा, पो देवली–अमोलवा तिराहा, इलाहाबाद

स्नेह व्यंजन

सिके हुए शाही बाफलें

सामग्रीः सूजी, गेहूं का आटा, लाल मिर्च पावडर, हल्दी, अजवायन, जीरा, नमक, काजू, बादाम, पिस्ता, किशमिश, घी.

बनाने की विधिः सूजी व आटा समान मात्रा में लेकर मिला लें, फिर इसमें लाल मिर्च पावडर, हल्दी, अजवायन, जीरा व स्वादानुसार नमक डाले व अच्छी तरह से मिला लें. फिर घी को थोड़ा गरम करके मोयन के लियें आटे में डालकर अच्छी तरह से मिलाइयें. अब गरम पानी करके उससे आटा लगा लें आटा लगाकर उसके गोले बना लें जब गोले बन जायें तब गोलों में किशमिश, काजू, पिस्ता व बादाम के दो दो टुकड़ों करके उसमें भरे और गोले को बीच में थोड़ा दबा लें. अब भगोने में गरम पानी करें व सभी तैयार किये हुए गोलों को पानी में डालकर उबाल लें. जब गोले अच्छी तरह से उबल जाये तब उन्हें पानी से बाहर निकाल लें और उनको दो हिस्सों में काट लें.

अब ओवन ले और उसे गैस पर रखें जब ओवन गरम होने लगे तब कटे हुए गोलों को उसमें डालकर सेंकें. जब गोले अच्छी तरह से किस जायें तब उन्हें ओवन से बाहर निकालें और उनकों घीा में डालें इस तरह सिके हुए शाही बाफलों तैयार हैं. परोसतें समय बाफलें को चूर कर उनमें घी डालकर दाल व हरी चटनी के साथ पेश करें इस तरह सिके हुए शाही बाफली को खाकर आनंद उठायें. **श्वेता मंगल,** एन.ए.2 / 102ए अजमेरा, पिपरी, पुणे–18

कविताएं

पत्थर प्रेम

पत्थर–पत्थर ही होता है,
उसमें भावनाओं का अंकुर,
कदापि अंकुरित नहीं होता है,
वह तो बेजान ही होता है,
इसीलिए सदैव निद्रा में होता है,
अतः उसमें 'प्रेम–भाव' विलुप्त होता है!

तुझे नंगा होना होगा

मुझे 'नंगा' होना हैं!
जानते हैं क्यों?
क्योंकि इस युग में सभी,
वस्त्रों को पहनकर भी,
नंगे ही तो हैं?
क्या आपको नहीं लगता ऐसा?
जब हकीकत यह हैं,
तो वस्त्र पहनने की दरकार क्यों?
आज मेरा जमीर,
मुझे निरंतर कचोट रहा हैं,
वह निरंतर यही गुहार करता हैं,
तुझे नंगा होना होगा!
कब तक ओढेगा,
दिखावे का चोगा,
जिससे खायेगा प्राणी सदैव धोखा!
अतः,
तुझे नंगा होना होगा!

सुनील उपाध्याय, अहमदाबाद, गुजरात

1.गज़ल

गांठ के पूरे से चल यारी यार कें
फिर से दावत की तैयारी यार करेंकृ.
बच्चे बोले देख देख कर बोर हुए,
चल टीवी सी मारामारी यार करेंकृ.
आया है रमज़ान बहाना अच्छा हैं,
हम भी इक दावत इफ्तारी यार करेंकृकृ
देखतो आवे का आवा ही ऊत गया,
हम किस किसकी पहरेदारी यार करेंकृ
हमने दर्द को सांझा करना छोड़ दिया,
चल हम भी बातें अखबारी यार करेंकृ
जीवन में कुछ अच्छा करना अच्छा हैं,
नहीं रहे तो बात हमारी यार करेंकृकृ

2.

काम नहीं करते दफ्तर में बिना लियें
घर भी आतें नहीं बिचारे बिना पियेंकृ
क्या कमाल है यार कवि भी अफ़सर भी,
याने यार करेला वो भी नीम पियेंकृ.
अपनी कोठी की लड़ियों की धूम मचें,
तोड़ झोपड़ी, चलों बुझा दो सभी दियेकृ
खेल निरोल भद्रजनों की बस्ती के,
बदहवास सी पगली फिरती पेट लियेंकृ
संभव हो तो खुद को पागल कर डालों,
मरने का सुख कब मिलता है बिना जियेंकृ
तेज हवाओं से क्या रस्ता बदलेंगें,
हम फिरते हैं सीने में तूफ़ान लियेकृ.
कुछ पाने की खातिर खोना पड़ता हैं,
कब मिलता है फल जीवन मेंबिना कियेकृ
सतयुग होता हम भी षंकर हो जाते,
हरदम ही तो फिरते हैं विशपान कियें
सतयुग होता हम भी षंकर हो जाते,
हरदम ही तो फिरते हैं विशपान कियेंकृ
जंगल युग में जाने की तैयारी हैं,
अब तो कपड़े पहनेंगें भई बिना सियेंकृ
हैं सारे हैरान 'मोदगिल' अचरज हैं,
पीये लगता हूँ होता हूं बिना पियेंकृ

योगेन्द्र मौदगिल, पानीपत, हरियाणा

ग़ज़ल

न लड़ पाया दिया जब आंधियों से।
तो रिष्ता कर लिया तारीकियों से।।
मिले कुछ भी सज़ा, मैं सच कहूंगी।
ये दुनिया भर गई हैं पापियों से।।
पहेली रोज़े–अव्वल से है हस्ती।
इस बूझेंगें हम भी शोख़ियों से।।
उसे वो आज तक भूला नही है।
फ़रेब उसने जो खाया तितलियों से।।
निगाहें थक गई कल षब तो मेरी।
न झांका चांद काली बदलियों से।।
ग़मों की ओट में बैठी रहीं मैं।
मुझे देखा न तुमने कनखियों से।।
कोई भी मस्अला हो जिन्दगी का।
हुआ है हल कभी क्या गोलियों से।।
चुरा कर ले न जाए रौनकों को।
हवा–ए–गर्म, अपनी वादियों से।।
युही बनते रहेंगें 'राज' मुजरिम।
न जोड़ोगें उन्हें जो रोटियों से।।

डॉ0 राजकुमारी शर्मा 'राज'

++++++++++

ग़ज़ल

ज़िन्दगी की धूप ढलती जा रही हैं
शाम की स्याही नज़र अब आ रही है
शक्स का अब क्या भरोसा, कब ढलेगा?
तीरगी सी एक दिल पर छा रही हैं।
कितने अरमानों को ले डोली सजाई,
हसरतों को साथ वो ले जा रही हैं।
दोस्तों ने दूर से मुझकों पुकारा,
उनको क्या मालूम अज़ल कब आ रही हैं।
रंजो ग़म का कौन निबटारा करेगा,
एक गहरी नींद मुझको आ रही है।
चन्द दिन लेकर यहॉ इंसान आया,
देख लो कुदरत कहर अब ढा रही हैं।
बांट लो जो भी खुषी तुमको मिली हैं,
अब फ़ना होने की बारी आ रही है।

भागवत प्रसाद मिश्र 'नियाज'
एफ.एफ.–4, बी, ब्लॉक, सन पावर फ्लैट्स,
गुरूकुल रोड, अहमदाबाद–280052

++++++++

ग़ज़ल

तुझसे ही सब हासिल हैं,
तू ही अपनी मंजिल हैं।
उससे मिलना आंसा हैं,
खुद से मिलना मुष्किल हैं।
मेरा अपना अपना क्या,
सब कुछ तुझमें शामिल हैं।
मैं तो बस इक तूफॉ हूँ,
तू ही मेरा साहिल है।
तुझसे मिलकर पता चला,
'गुलषन' कितना काबिल हैं.

डॉ0 अषोक पाण्डेय, 'गुलषन'
कानूनगोपुरा, उत्तरी, बहराइच, उ.प्र.

शापिंग

बड़े साहेब दफ्तर के सभी कर्मचारियों को निर्देषित करते हुए बोले कल रेलवे स्टेषन पर सभी लोग ट्रेन छूटने से आधा घण्टे पहले पहुंच जायंगे. इस पिकनिक को यादगार बनाना हैं इतना सुनते ही त्रिलोचन उठ खड़ा हुआ साहब से कहने लगा साहेब मुझे स्टेषन जाने में दिक्कत होगी. मेरा परिवार बड़ा हैं और घर भी दूर हैं. बड़े साहेब इसमें दिक्कत की कोई बात नहीं ड्राइवर स्टेषन तुमको छोड़ देगा. इसी बीच एक अधिकारी महोदय भी बोल बैठे. मेरे परिवार को भी छोड़ देगा. त्रिलोचन के परिवार के साथ जबकि खुद कार मालिक थें. बड़े साहब ने सहमति दे दी. निर्धारित तिथि का त्रिलोचन और उसका परिवार प्रातः नहा धोकर तैयार हो गया. अपने सामान के साथ पर ड्राइवर नहीं आया. इस बीच कई बार त्रिलोचन बड़े साहेब को फोन लगाया वहां से यही कहा जाता कि पहुंचने वाला होगा. वह तो नौ बजे का ही निकल गया हैं परेषान होकर त्रिलोचन उस अधिकारी को भी फोन लगाया तो उनके यहां भी नहीं ड्राइवर पहुंचा वैसे भी यह ड्राइवर पहुंचा वैसे भी यह ड्राइवर भेदभाव ज्यादा ही करता था. हां अपने स्वार्थ को भरपूर तवज्जों देता था बाकी दूसरे की घी की गगरी ढरकती रहे जरा भी परवाह नहीं करता था. थक कर पुनः बड़े साहेब से सम्पर्क किया. त्रिलोचन तब तक बहुत दे हो चुकी थी. ट्रेन छुटने का समय सिर पर आ चुका था. त्रिलोचन दो आटों रिक्षा करके स्टेषन पहुंचा. दूसरे अधिकारी अपनी कार से पहले हीं पहुंच चके थें औरवे त्रिलोचन को लिफ्ट नहीं दे सकें. षायद अपने बड़े होने की वजह सें त्रिलोचन के स्टेषन पहुंचने से पहले गाड़ी को जाने का संकेत मिल चुका था. बड़ी मुष्किल से जान पर खेल कर त्रिलोचन और उसका परिवार ट्रेन में घुस पाया. उध ार वापसी में दूसरे साहेब ट्रेन से उतरे तो त्रिलोचन से पूछने लगे त्रिलोचन घर तक ऑटों रिक्षे वाला कितना किराया लेगा. तब त्रिलोचन बोला अरे सर आते समय जितना लिया था उतना ही लेगा. तब अधिकारी बोले अरें मेरा बेटा कार से छोड़ गया था. त्रिलोचन और उसके परिवार को ड्राइवर रेलवे स्टेषन नहीं छोड़ा. यह बात बड़े साहेब के पास पहुंची. तब ड्राइवर बोला—मैं तो अपने बीबी बच्चों के साथ कार से षापिंग करने गया था.

विषमाद

दो अक्टूबर के ठीक चौदहवें दिन देष के कुछ जन प्रतिनिधियों का एक समिति द्वारा कुछ प्रतिश्ठित संस्थानों के काम काज का निरीक्षण था. जो संस्थायें देष जन सेवा, समता सहकार व उत्थान करने का दावा करती थी. इन्हीं संस्थाओं में से एक संस्था थी जिसमें बेचारा खुषीराम अपनी हाडफोड मेहनत से संस्था के हितार्थ काम करता था तथा खुद के आसूओं के रंग से अपना भविश्य संवारने की कोषिष कर रहा था. विशमता के जहरीले घुंट पीकर. नाम तो खुषीराम था, पर था बहुत दुखी.

निरीक्षण समिति के षहर में आने के पूर्व और जाने तक खुषीराम से वैसे ही काम लिया गया जैसे घोड़े की पूंछ के उपर रिसती घाव पर चाबुक मारकर. निरीक्षण समिति षहर के बड़े होटल में रुकी खूब जष्न मनाया गया. जिसमें संस्था के अफसरों ने खूब आनन्द उठायें और निरीक्षण समिति के सदस्यों का क्या पूछना. हां, खुषीराम को इन सब जष्नों से दूर ही रक्खा गया. किसी ना किसी विशमाद की वजह से. हां जष्न तो कई दिनों तक खूब जमा था. खुषीराम द्वारा बनायी गयी अश्रुपूरित रपट ने रंग ही जमा दिया था. पर जष्न और श्रेय से खुषीराम का नाम कोसे दूर था. षायद नन्हा पद होने के नातें.

ऐसा क्यों?

पापाजी मर गये का समाचार फैल गया. क्यों ना फैलता बड़े साहब के पिताजी थें उपर से नेक इंसान भी. लम्बी बीमारी के बाद अस्सी बरस की उम्र में उनका देहावसान हुआ था. बड़े साहब कम्पनी में बड़े पद पर पदासीन थें पिताजी से उनका काफी लगाव था. बहुत सेवा सुश्रुशा किये थे. पापाजी भरापूरा परिवार छोड़कर स्वर्गारोहण किये थें पापाजी के अन्तिम संस्कार में दफ्तर के लोग दफ्तर की गाड़ी से अन्तिम संस्कार में गये पर छोटे बाबू को नहीं पूछा गया. छोटे बाबू बीमारी हालत में बिना किसी षिकायत के पापाजी के अंतिम संस्कार में षामिल होकर श्रद्धांजलि के साथ पुश्पांजलि अर्पित कर आयें. उठावना के दिन दफ्तर के सभी तथाकथित साहेब लोग सपरिवार पुनः दफ्तर के वाहन से ही गयें परन्तु इस बार माहौल बदला बदला था. छोटू बाबू से छिपाया जा रहा था. पर छोटू बाबू को लोगों के हावभाव से पता चल ही गया था. छोटे बाबू को अपने छोटेपन का भरपूर एहसास था. जैसे किसी रिसते घाव का दर्द पीड़ित को याद रहता हैं छोटू बाबू भेदभाव के उमड़ते दरिया को देखकर तिलमिला जाते पर वे न तो बड़े साहेब थे ना ही बड़ी बिरादरी के आखिरकार भेद का दंष स्वर फूट ही पड़ा अचानक उनके मुंह से निकल गया आह अरे ऐसा मेरे साथ ही क्यों होता हैं.

नन्दलाल राम भारती, आजाद दीप, 15—एम—वीणा नगर, इंदौर, म.प्र.—452010

साहित्यिक गतिविधिंया

कार्य0 संपादिका डॉ. 'सरल' को साहित्य रत्न

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के द्वारा विश्व स्नेह समाज की कार्यकारी संपादिका डॉ. कुसुमलता मिश्रा सरल के 50वें जन्म दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय हिंदी मासिक 'विश्व स्नेह समाज के सहयोग से एक युवा काव्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इस प्रतियोगिता में नैनी के बहुचर्चित युवा कवि ईश्वर शरण शुक्ल को प्रथम, प्रीतमनगर के अवधेश मौर्या को द्वितीय तथा स्नेहलता को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ.

इस अवसर पर डॉ0 कुसुमलता मिश्रा को साहित्य रत्न की सम्मानोपाधि से भी सम्मानित किया गया. इसके पहले यह सम्मान भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के संयोजक एवं साहित्याजंलि प्रभा के संपादक डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय को दिया जा चुका हैं.

कार्यक्रम का प्रारम्भ 10 कवियों के काव्य संग्रह सुप्रभात के विमोचन से प्रारम्भ हुआ. इसके बाद युवा कवियो ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत की. परवीन जहॉ ने–

जब आदमी के पेट में आती है रोटियां,
फूली नहीं बदन में समती है रोटियां

इटावा के कवि जगदीश चन्द्र की–

आखिरी बूंद खून की सूख जाये,
ये किलकारियां बुलन्द सदा गूजती रहें

अवधेश कुमार मौर्या की–

देखो! सड़का पर चलती बुढ़िया
झोली लटकाएं बाहों में,
अनजान गली में
इस द्वार से उस द्वार तक
बाबू भैया कहकर हाथ पसारे

ईश्वर शरण शुक्ल की–

जब गुजरता हूँ फूलों के पथ से,
तब महक रोक देती हैं पग को

अशोक गुप्ता की–

स्वतंत्र हे हम भी स्वतंत्र हैं
स्वतंत्रता के इस स्वदेश में
काफी सराही गयी.

इसके अलावा निर्णायक मंडल में शामिल कुटेश्वर नाथ त्रिपाठी 'चिरकूट इलाहाबादी', डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय, डॉ0 कुसुमलता मिश्रा, शिव प्रसाद पाल, गीता देवी ने भी काव्य पाठ किया. कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे समाज श्री सम्मान से सम्मानित, जहॉगीर मेमारियल अस्पताल के निदेशक डॉ. अनवार अहमद ने कहा–सभी व्यक्तियों को युवाओं का हर तरह से प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ने में मदद करनी चाहिए. समाज में असहायों के सहयोग के लिए आगे आना चाहिए. विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं. कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री हरजीत सिंह मारवा ने श्री द्विवेदी के कार्यो की सराहना की तथा युवा कवियों को मंच देने के लिए धन्यबाद दिया.

कार्यक्रम के दूसरे विशिष्ट अतिथि श्री एस0पी.सिंह चीफ कोआर्डिनेटर एक्यूप्रेशर एवं शोध संस्थान, ने डॉ. मिश्रा को जन्म दिन पर बधाई देते हुए कार्यक्रम की सराहना की.

सुश्री गीता देवी ने भी अपनी स्वलिखित एक सोहर से डॉ. मिश्रा को जन्म दिन की बधाई दी.

कार्यक्रम का संचालन विश्व स्नेह समाज के संपादक व विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने किया. इस अवसर पर सैफियन्ट संस्थान के सचिव, हरकिरत सिंह, समाज सेवी पतविन्दर सिंह, श्री इन्द्रजीत सिंह मारवा, राजेश सिंह, आदि उपस्थित थें.

.ग़ज़ल

बना लिया है जो मैंने मकान कागज पर
सिमट गया है मेरी मां का ध्यान कागज पर
तसल्ली दे रहा हूँ झूठी बूढ़ी ऑखों को
दिखाता रहता हूँ दोनों जहान कागज पर।
बदल न पायेगा तू अब कभी जुबां अपनी
कि लिख गया हैं तेरा सब बयान कागज पर
चमन के फूल तो सारे कुचल दिये लेकिन
खिला रहा हैं उन्हें बागवान कागज पर
ज़मी पे देखने से हम कहीं न देख सके
खुदा गए हैं कुए मेहरबान कागज पर
नई सदी की उड़ाने है बेपरों की मगर
उतार लाए हैं सब आसमान कागज पर
बिखरनी धज्जियों को देख–देख सड़कों पर
सिसक रहा हैं मेरा संविधान कागज पर
तेरे मिटाने से हरगिज न मिट सकेगें कभी
मैं छोड़ जाऊँगा ऐसे निषान कागज पर
किसी को माल औ दौलत पे गुमां है अपने
'साज' को दोस्तों बस हैं गुमान कागज पर।

ज्ञानेन्द्र साज, सम्पादक, जर्जर कष्ती, 17/12, जयगंज, अलीगढ़–202001, उ.प्र.

स्नेह हंसगुल्ले

राजरानी चाय
जरा हंस दो मेरे भाय

☠रोहित (अपने दोस्त मोहन से)-यार मैं सोचता हूं कि मैं इस गॉव में एक छोटा सा क्लीनिक खोल लूं, तुम्हारा क्या विचार हैं?

मोहन-खोल लों, अच्छा विचार हैं. लेकिन इस बात का ख्याल रखना कि यहॉ का कब्रिस्तान बहुत छोटा हैं.

☠मरीज (डाक्टर से)-डॉक्टर साहब, आपने नर्स बहुत अच्छी रक्खी हैं. उसका हाथ लगते हीं मैं ठीक हो गया.

डॉक्टर-हॉ, जानता हूं. कुछ देर पहले मैंने चांटे की आवाज भी सुनी थी.

☠डाक्टर (मरीज से)- अगर तुम शराब पीना छोड़ दो तो सौं साल तक जी सकते हों.

मरीज-लेकिन बिना शराब के सौं साल तक जीकर मैं करूंगा क्या?

☠ डाक्टर (मरीज से)- देखों , तुम चिन्ता करना छोड़ दो तो तुम ठीक हो सकते हों?

मरीज-लेकिन चिन्ता करना छोडू कैसे डाक्टर साहब?

डॉक्टर-क्यों, तुम्हें आखिर चिन्ता क्या हैं?

मरीज- अभी तो आपके बिल की चिन्ता हैं.

☠ विधानसभा चुनाव में एक उम्मीदवार जनसम्पर्क करते हुए एक वोटर से बोला, 'भाई साहब, ध्याना रखिएगा. मैं खड़ा हूँ!. वोटर ने बगल में पड़ी खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा-'अरे, तो आप खड़े क्यो हैं, बैठ जाइये न.

राहुल देव,
६१४८, कोतवाली मार्ग, महमूदाबाद, सीतापुर,

☠ जज- साफ-साफ बताओं यह आदमी कैसे मरा?

मुजरिम-यह बचपन से ही बहुत भुलक्कड़ किस्म का आदमी था इसलिए सांस लेना भूलगया होगा.

☠टोनी-यार, तुमने जो पौधा मेरे घर के गमले में लगाया था, वह अभी तक बढ़ा नहीं.

जॉन-तुम्हें कैसे पता चला?

टोनी-क्योंकि मैं उसे रोज उखाड़कर देखता हूँ.

☠ भगवान- तुम नरक में जाना पंसद करोगें या स्वर्ग में?

व्यापारी-जी, आप मुझे स्वर्ग और नकर दोनों के बीच में जगह दें दीजिए जिसमें दोनों तरफ के ग्राहक मिल जाएगें.

इधर-उधर की

अपनी मां का पति

राजा इंडीपस द्वारा अपने पिता की हत्या और फिर अपनी मां से विवाह करने की यूनानी कथा भले पुरानी पड़ गयी हो, लेकिन आज भी ऐसे लोग मिल जाते हैं, जो उसकी याद ताजा करा देते हैं. निकारागुआ के ३२ वर्षीय बेटे जेफरी सिल्वा पाशिकों द्वारा अपनी ही ६५ वर्षीया मां फ्लोरेंसिया सिल्वा से विवाह का मामला प्रकाश में आया हैं. लेकिन जहां इंडीपस ने अनजाने में अपराध किया था, वहां जेफरी ने ऐसा फरेब के तहत किा हैं. दरअसल फ्लोंरेसिया अपने मुल्क की मुफलिसी से तंग आ चुकी थी, इसलिए मां-बेटे ने १९८७ में ब्याह का स्वांग रचा कर कोस्टारिका की नागरिकता हासिल कर ली, नौकरियां पा ली और चैन से रहने लगें. लेकिन पाशिको जिस कंपनी में नौकरी करता था, वहां रूपयें की हेराफेरी में फंस गया. मामला पुलिस में गया. जांच पड़ताल हुई और भेद खुल गया.

राजा हो या रंक, सबकी पसंद राजरानी चाय

हमारे अन्य प्रोडक्टः

राजरानी सब्जी मसाले, राजरानी हल्दी, राजरानी लाल मिर्च, राजरानी सेवई, राजरानी ऑवला चूर्ण, राजरानी चटपटा, राजरानी हींग, राजरानी मीट मसाला,

निर्माताः श्री पवहारी इण्डस्ट्रीज,इलाहाबाद

चुटकुले भेजिए और पाइए राजरानी चाय के पैकेट मुफ्त

अच्छे चुटकुले भेजने वाले व्यक्ति को राजारानी चाय की तरफ से ५ किलों, २ किलों, १ किलों, ५०० ग्राम, २५० ग्राम के चाय पैकेट मुफ्त दिए जायेंगें.

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. **मधुशाला की मधुबालाः** लेखक राजेश कुमार सिंह मू0 10.00
2. **सुप्रभात :** दस रचनाकारें का संग्रह मू0: 10.00
3. **निषादं उन्नत संदेश :** लेखकःचौ0 परशुराम निषाद, मू0 10.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखें:
मनीआर्डर/डी.डी.
सचिव, विश्व हिदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

साहित्य मेला ०६ की कुछ झलकिंया

श्रीमती हेमा उनियाल व अन्य विद्धजन

श्रीमती हेमा उनियाल व अन्य विद्धजन